ॐ श्री गणेशाय नमः

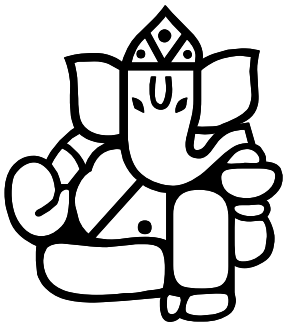

Horoscope of **Sample**
Prepared using **Astro-Vision LifeSign** Software.
Licensee: Astro-Vision Futurtech Pvt.Ltd.

~~~~~~

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

~~~~~~

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक प्रक्रिया की अनुगम के लिए
यह जन्मकुण्डली लिखा गया है

Astro-Vision
YOUR TOMORROW

नाम	: Sample
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 14 फेब्रुवरी, 1987 शनिवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 06:30:00 AM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: Paramagudi
रेखांश : अक्षांश (Deg.Mins)	: 78.36 पूरब , 9.33 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष उ 23 डिग्रि. 40 मिनिट. 34 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: **मघा** - 1
जन्म राशी - राशी का देव	: **सिंह** - रवि
लग्न - लग्न का देव	: मकर - शनि
तिथि	: प्रथमा, कृष्णपक्ष
सूर्योदय	: 06:36 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 06:24 PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 11.48
दिनामान (Nazhika.Vinazhika)	: 29.30
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 16 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: शुक्रवार
कलिदिना	: 1858374
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन
नक्षत्र का देव	: केतु
गणम्, योनी, जानवर	: असुर, पुरुष, चूहा
पक्षी, पेड	: महोक, वट वृक्ष
चन्द्र अवस्था	: 3 / 12
चन्द्र वेला	: 9 / 36
चन्द्र क्रिया	: 14 / 60
ठगड़ा राशी	: तुला,मकर
करण	: वाध
नित्ययोग	: शोभना
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: कुंम्भ - धनिष्ठ
अनगदित्य का स्था	: हाथ
Zodiac sign (Western System)	: Aquarius
योगी पोयन्ट् - योगी नक्षत्र	: 157:27:52 - उत्तर फालगुनी
योगी गृह	: रवि
द्वगुणति योगी	: बुध
अवयोगी नक्षत्र - गृह	: अनुराधा - शनि
आत्म करक - करकांसा	: शनि - कुंम्भ
अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	: बुध
लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	: कन्या
धन अरुढ़ा	: सिंह

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का राशी - कुंभ्भ

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	322:20:55	गुरु	356:8:1
चन्द्र	146:41:30	शनि	259:30:46
रवि	324:47:31	युरेनस	265:49:1
बुध	342:42:22	नेप्टयून	277:11:34
शुक्र	280:1:48	प्लूटो	219:58:25 रितु
मंगल	25:27:28	नोड	14:9:45

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष उ 23डिग्रि.40 मिनिट.34 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	298:40:20	मकर	28:40:20	धनिष्ठ	2
चन्द्र	123:0:56	सिंह	3:0:56	मघा	1
रवि	301:6:56	कुंम्भ	1:6:56	धनिष्ठ	3
बुध	319:1:48	कुंम्भ	19:1:48	शताभिषा	4
शुक्र	256:21:13	धनु	16:21:13	पूर्वषाढा	1
मंगल	1:46:53	मेष	1:46:53	अशविनि	1
गुरु	332:27:26	मीन	2:27:26	पूर्व भद्रपाढा	4
शनि	235:50:12	वृशचिक	25:50:12	ज्येष्ठ	3
राहु	350:29:11	मीन	20:29:11	रेवत्ति	2
केतु	170:29:11	कन्या	20:29:11	हस्त	4
गुलिक	229:3:15	वृशचिक	19:3:15	ज्येष्ठ	1

राशी **नवांश**

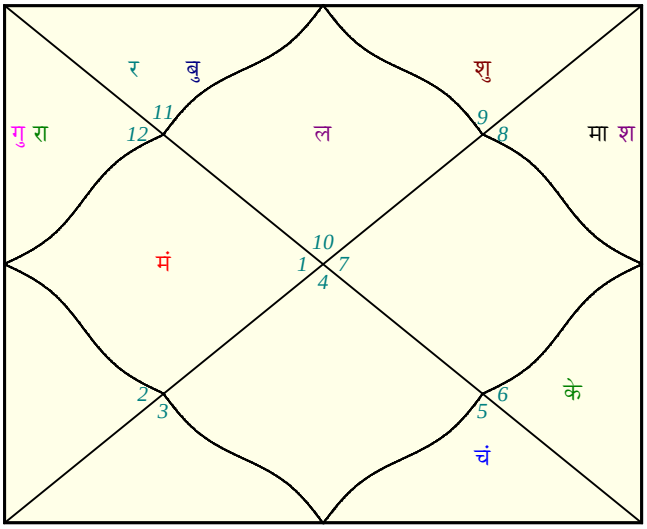

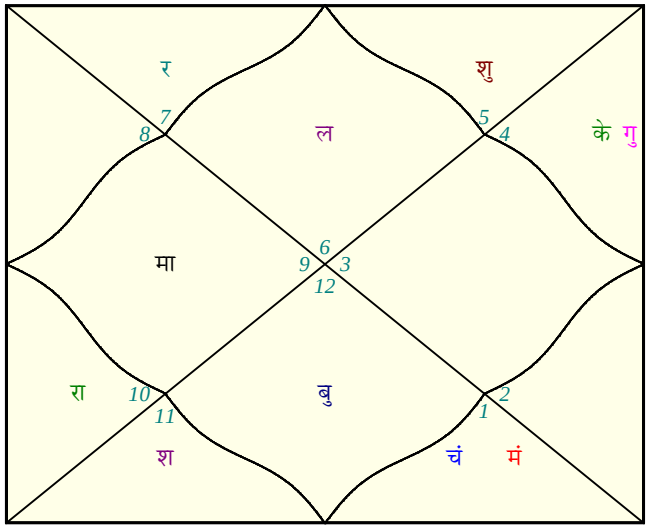

जन्म के समय दशा की समतुलना = केतु 5 साल, 5 महीने, 0 दिन

विशिष्ट राशी चक्र

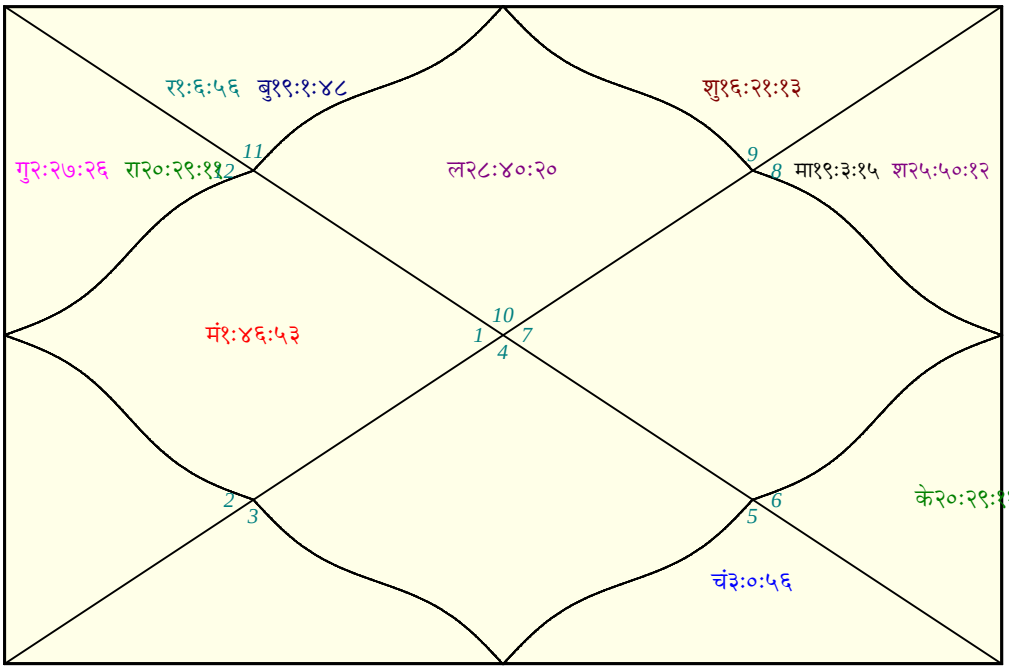

? विपरीत परिस्थिती **)** श्रेष्ट समय **(** क्षीण परिस्थिती **;** सयहोग

नवांश: चं::मेष र::तुला बु::मीन शु::सिंह मं::मेष

गु::कर्क श::कुंम्भ रा::मकर के::कर्क ल::कन्या मा::धनु

जन्म के समय दशा की समतुलना = केतु 5 साल, 5 महीने, 0 दिन

भाव कुंडली

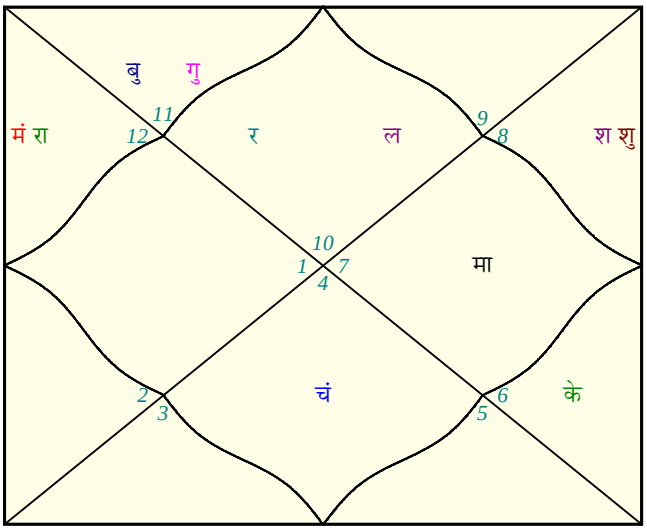

भाव टेबुल

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य (मध्य) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	अन्तिम (अंत) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	गृहों भाव में उपस्थित है
1	284:50:10	298:40:20	314:50:10	र
2	314:50:10	331:0:1	347:9:51	बु,गु
3	347:9:51	3:19:41	19:29:31	मं,रा
4	19:29:31	35:39:22	49:29:31	
5	49:29:31	63:19:41	77:9:51	
6	77:9:51	91:0:1	104:50:10	
7	104:50:10	118:40:20	134:50:10	चं
8	134:50:10	151:0:1	167:9:51	
9	167:9:51	183:19:41	199:29:31	के
10	199:29:31	215:39:22	229:29:31	मा
11	229:29:31	243:19:41	257:9:51	शु,श
12	257:9:51	271:0:1	284:50:10	

नाम : Sample [पुरुष]

सप्ताह के दिन में। : शुक्रवार (आपका जन्म शनिवार को सूर्योदय के पहले हुआ था. ज्योतिष शास्त् के अनुसार दिन की शुरुवात सूर्योदय के बाद ही होती है. सलिए आपकी जन्म तिथि शुक्रवार को माना जायेगा.)

शुक्रवार में जन्म लेने के कारण आपको सफेद और ललति रंग के वस्त्रों और चीजों से अभिरुचि होगा । भूसंम्पति और खेंती से आपको प्राकृतिक आकषर्ण होगा । दुसरों के दुःख को समझकर उसमें शमिल होने के लिए आप तैयार होगों ।

जन्म नक्षत्र : मघा

जन्म नक्षत्र मघा है। आपके जीवन में सामान्य प्रगति होती रहेगी। आप स्वस्थ और शान्त हैं। विज्ञान तथा तकनीकी किसी भी विषय में विज्ञ तथा सामाजिक कार्यों में कुशल होंगे। आप परंपरा पर विश्वास करनेवाले, सच्चे तथा भविष्य दृष्टा बनेंगे। आप दृढ़ एवं

आदर्शवान होंगे। सच्चाई और शील आपके आभूषण हैं। आप दूसरों के लिए सब कुछ करने को तैयार रहेंगे। यह आश्चर्य की बात होगी कि आपके कई शत्रु भी हो सकते हैं। आप अपनी इच्छा के अनुसार सभी कार्य करने की शक्ति रखनेवाले हैं। इससे दूसरों की सहायता की बड़ी आवश्यकता नहीं होगी। आप अपने संबन्धियों तथा मित्रों से विशेष प्यार रखते हैं। आपके असाधारण योग्यता के कारण अधिकार शक्ति प्राप्त करेंगे। एक पिता के तौर पर सन्तानों के प्रश्नों का सामना करना पड़ेगा। हर समस्या के प्रति धीरज और स्वस्थता से निराकरण करने में समर्थ है। आप शालीनता और धार्मिक जागृति धारण करने वाले हैं। आप किसी पर उपकार करेंगे तो बदले में अपकार ही प्राप्त होगा। उच्च स्थान प्राप्त होने पर अपनी कार्यशक्ति के माध्यम से श्रेष्ठ तरीके से कार्य सुशोभित करने वाले हैं। आप सौन्दर्य और कला के उपासक हैं। आपका प्रगति दूसरों में ईर्ष्या जागृत करेगा। आपकी सभी इच्छायें फलित न हो पायेंगा। इसलिए दुःखी होना भी व्यर्थ होगा।

नेत्र या चर्मरोग से सतर्क रहना लाभप्रद होगा। अर्धांगिनी (पत्नी) पर हुकूमत करने की आदत पर अंकुश लगायें, तब ही घर में स्वर्ग सा सुख भोग पायेंगे। शरीर अधिक स्थूल न हो, इस बात को सदा याद रखें। घर-बाहर चोरी से होने वाली हानि से सावधान रहें। गुरुजनों का आशीर्वाद सदा प्राप्त होगा। मघा गंडमूल संज्ञक नक्षत्र है। अशुभ फलों से बचने के लिए इसकी शान्ति करने की परम्परा है।

तिथि : प्रथमा

आप का जन्म प्रथम तिथि में हुआ है। आपको दस्तकारी में अभिरुचि है। आप मन से धैर्यशील हैं। आप सज्जनों के प्रेमी और आदर सत्कार करने के आदि हैं। आप एक अच्छे तत्वचिंतक भी हैं। मानव मूल्यों और आदर्शों में आप का ऊँचा स्थान है। आप रहस्यमय बातों के बारे में जानने के इच्छुक हैं। आपका परिवार बड़ा होगा। आपकी विद्वता, शालीनता और नम्रतापूर्ण व्यवहार दूसरों के लिए अनुकरणीय होगा।

करण : वाध

बलवा करना में जन्म लेने के कारण आप एक स्वतंत्र चिन्तक होगें । आपके ऊपर नियंत्रण करना आप रोकते है । रिशतेदारों को आप ज्यादा महत्व नहीं देते ।

नित्ययोग : शोभना

शोभन नित्ययोग में जन्म होने से आपको दृश्यकलाओं तथा उनके प्रदर्शन में अधिक रुचि रहेगी। आप सभी वस्तुओं को कलात्मक दृष्टि से देखते हैं। अधिक संपत्ति और सुख आपको प्राप्त होगा। अच्छे संबन्धियों की कमी नहीं रहेगी। आप ताकतवर हैं। आप भाग्यदेव से अनुगृहीत हैं। सुख और संपत्ति आपके चरणों में हाज़िर रहेगी। स्वादिष्ट भोजन के इच्छुक हैं। हर कार्य पूरे मन और उत्साह के साथ करने वाले हैं।

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्वि को सूचित करता है ।

लग्न स्थान मकर राशि होने से आप संतोषी स्वभाव के व्यक्ति हैं। शरीर से आप लंबे कद के व्यक्ति हैं। अनिवार्य संजोग के बीच ज़रूरत पड़ने पर किसी को धक्का दे सकते हैं। आप हृदय से कठोर हैं और आप में भीरूत्व छिपा
पड़ा है। परोपकारी सभी कार्यों में आप अभिरुचि रखते हैं। फल फूल और जल के माध्यम से लाभ होगा। अन्य लोगों को भोजन देना आप पसंद करते हैं। श्रेष्ठ संतान से और सुख से आपका जीवन अनुग्रहित है। आप पराक्रमशील व्यक्ति हैं। विपरीत योनि के लोगों के माध्यम से अनेक सहायता प्राप्त होगी। पशुओं के प्रति सद्भाव रखनेवाला स्वभाव है। विशेष सुखभोग का योग है। प्रशासन पीठवाले नगर (बड़े नगर) में रहने की अधिक संभावना जान पड़ती है। विज्ञान और कला में समान अधिकार होगा। यश-कीर्ति अतुलित प्राप्त होगी। हठ, आलस्य, स्वार्थ और क्रोध आपके प्रमुख शत्रु होंगे।

पाँचवे स्थान पर वृषभ राशि होने से मनमोहक सौन्दर्यवान पुत्री प्राप्त होगी। आपकी पुत्री पतिव्रता धर्म का पालन करने वाली सुकन्या होगी। आप स्वयं नीतिवान, विद्या प्रेम, सरल हृदय और परदुःख को देखकर द्रवित होनेवाले होंगे।

सिंहराशि आठवें भाव में होने से ज़मीन पर घिसट कर संचार करने वाले प्राणी से बचते रहना चाहिए। उदाहरण के तौर पर आपको सर्पदंश से बचकर चलना चाहिए। रात के वक्त अंधेरे में अकेले संचार करना खतरनाक हो सकता है। सतर्कता के साथ रहते हुए भी दुष्ट लोगों से उपद्रव होता रहेगा। ईश्वर निष्ठा में कमी दिखाई देगी और होगी तो भी अप्रकट रहेगी। आप अपने विरोधियों से मिल-जुल गये हैं। आप होशियारी से और मधुरभाषी स्वभाव के माध्यम से अन्य को अपने ताबेदार बना सकते हैं। मैत्रीपूर्ण चर्चा के नेता भी बन सकते हैं। बारहवें स्थान पर धनुराशि के होने से अन्य लोगों से ठगे जाने की संभावना रखते हैं। नयी मित्रता स्थापित करते वक्त सावधान रहना आपके लिए अनिवार्य है। कोई ख़ास प्रकार के उच्च अफसरों या घर के बड़ों के माध्यम से कुछ समस्याओं का सामना करना होगा। आयु के ३२वें से ३६वें वर्ष तक का समय शुभकारक होगा।

अयोग्य संगत के कारण व्यय होने की संभावना है। संगीत, साहित्य और नृत्य के क्षेत्र में अति अभिरुचि रखने वाले हैं। बुरे मार्ग पर चलने वाले और अनुशासन विरुद्ध जीवन बिताने वालों से न चाहकर भी संबन्ध रखना पड़ेगा। आर्थिक नियंत्रण हाथ से सरक जायेगा। हर कार्य के प्रारंभकाल में ही अनेक विरोधों का सामना करना पडेगा। संक्षिप्त में कहा जा सकता हैं कि जीवन के पूर्वार्धकाल के बाद ही प्रगति की प्रतीक्षा कर सकते हैं। लेन देन के कार्य में अति जाग्रता अनिवार्य है। जीवन के २६,२९,३६,४१, ४६,४९ और ५५ वाँ वर्ष आपके लिए अति महत्वपूर्ण रहेंगे।

लग्नाधिपति ग्यारहवें स्थान पर है। योग्य प्रगति के साथ संपत्ति और श्रेष्ठ व्यक्तित्व भी प्राप्त होगा। अनेक प्रकार के सुख-भोग का आस्वादन प्राप्त होगा। उदारचित्त और स्वाभिमानी हैं। पूरी तरह चिन्ता से मुक्त होना संभव नहीं। यह ग्रह अपनी दशा में सरकारी परेशानी विभागीय जाँच अथवा पूज्य जन को पीड़ा भी कर दे सकता है।

आपके जन्मकुण्डली में पहला भाव के लग्न देव वित्त सम्बधी सम्पन्नता, विचारण शक्ति और प्रसिद्वि को सूचित करता है ।

आपके जन्मकुण्डली में शनि गृह का भाव पहली भाव में है और यह अच्छी सूचना नहीं है । दूषित वातवरण और संदेह युक्त दोस्तो से दूर रहना चाहिए ।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरा भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर है। वैविध्यपूर्ण संपत्ति की प्राप्ति होगी। लोगों के बीच सम्मान और मान्यता प्राप्त होगी। बालावस्था में स्वास्थ्य में कमज़ोरी होगी। बाद में स्वास्थ्य में संपूर्ण आरोग्य प्रदान होगा। धन संचय और धनागमन आवश्यकतानुसार सदा होता रहेगा।

सूर्य दूसरे स्थान पर रहने से आप संतोषी और विनम्र रहेंगे। आप पक्षियों में चार पैरोंवाले जानवरों में तथा खेती काम में अभिरुचि रखनेवाले व्यक्ति हो सकते हैं। संपत्ति एकत्रित करने के कार्य में सफलता सदा आपका साथ देगी, यह भूलकर भी नहीं सोचना चाहिए।

बुध दूसरे स्थान पर रहने से साहित्य क्षेत्र में अनन्य प्रगति प्राप्त होगी। स्वपरिश्रम से धन कमाने में सफलता मिलेगी। आप श्रेष्ठ और स्वादिष्ट भोजन के इच्छुक हैं। कौटुँबिक सुख का आस्वादन प्राप्त होगा। वाणी में मधुरता होगी।

क्योंकि मंगल गृह और दूसरी देव एक ही स्थान पर उपस्थित है आप वकालत और न्याय से सम्बधित क्षेत्रों में सफल हो सकते है ।

ऐसा देखा जाता है कि गुरु दूसरे देव से संयोग में है । आप पुराने ऐतिहासिक पुस्तके पठना पसन्द करते है और अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना चाहते है ।

क्योंकि दूसरा देव और चौथा भाव से प्रभावित है, आप मातृत्व सम्बंधो से धन और सम्पति पा सकते है ।

भाई/बहन

जन्मकुण्डली में उपस्थिति केन्द्र, त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई - बहन, धैर्य और बुद्वि को सूचित करता है ।

तीसरा भावाधिपति तीसरे स्थान पर रहने से परिवार के अंगों के माध्यम से सुखानुभूति होगी। आप का प्रसन्नतापूर्ण व्यक्तित्व जीवन में ऐश्वर्य प्रदान करेगा। आपका पराक्रम सराहा जायेगा। प्रेक्टिकल कार्य में पूर्ण पारंगता प्राप्त होगी। हर परिस्थिति में प्रसन्न रहना आपका प्रमुख गुण होगा। संतान भाग्यशाली होगी। धन से सदा परिपूर्ण रहने का योग परिलक्षित हो रहा है। सब प्रकार के सुख सदा उपलब्ध होंगे।

गुरु तीसरे स्थान पर रहा है। इस कारण आप सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करनेवाले व्यक्ति बनेंगे। हर कार्य और संभावित घटना को अनेकान्त दृष्टि से समझने की क्षमता आप में रही है। अन्य लोग आप से आकर्षित होंगे। आर्थिक दृष्टि से निर्बल होते हुए भी हर व्यवहारिक कार्य बड़ी सुन्दरता से निपटाने के आदी हैं।

तीसरे स्थान पर राहु के होने से स्पष्ट श्रेष्ठ चिंतन कार्य और सशक्त मन के मालिक हैं। अन्य को समझने में और सन्मानित करने की कला में निपुण हैं। यह सब होते हुए भी भाई और बहनों के साथ क्लेश युक्त संबन्ध रहने की संभावना है। आपकी आयु दीर्घ रहेगी।

तीसरे भाव के उपस्थित शुभ गृह आपके भाई - बहन को दीर्घयु प्रधान करता है ।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपके जन्मपत्रिका में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव में ही स्थित है। आप परंपरा पर और धर्म पर विश्वास करने वाले हैं। आपको समाज में आदर प्राप्त होगा। आत्मीयता और अर्थपूर्ण पौराणिक आचार विचार का अध्ययन और पठन करना आप पसंद करते हैं। अटूट संपत्ति के मालिक हैं। लौकिक सुख संपन्नता प्राप्त होगी। जन समुदाय के बीच सम्मान प्राप्त होगा। राज सुख और शय्या सुख के साथ-साथ जनसमर्थन पर्याप्त मात्रा में मिलेगा।

चौथे स्थान का मालिक मंगल है। श्रेष्ठ योद्धा को सुशोभित करनेवाला बुद्धि चातुर्य प्रकट होगा। समर्पण की भावना प्रकट होगी। अपने

कार्यक्षेत्र में सफलता को हासिल करने में उपरोक्त स्वभाव मदद रूप रहेगा। तत्व विचार के क्षेत्र में ज़्यादा, प्रायोगिक कार्यों में आप सफलता प्राप्त कर पायेंगे।

कुज (मंगल) आपके चौथे भाव में स्थित होने से आप राजकरण के क्षेत्र में उन्नति कर सकते हैं। माँ से बड़े सुख का अनुभव न होगा। रिशतेदारों एवं मित्रों की बात भी ऐसी होगी। पारिवारिक बातों पर माँ से झगड़ा करने का संदर्भ उत्पन्न होंगे। रक्त विकार और छाती के रोगों से सदा सावधान रहें। समय-समय पर डॉक्टरी जाँच करवाते रहने की सिफारिश करते हैं।

बच्चे, मन, बुद्वि

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव बच्चे, मन और बुद्वि को सूचित करता है ।

पाँचवां भावाधिपति बारहवें स्थान पर रहने से संतान संबन्धी छोटी-मोटी समस्याओं का सामना करना होगा। जो प्रेम आप अपने बच्चों को प्रदान करते हैं उसी प्रकार अन्य बच्चे भी आप के प्रेम से पल्लवित होंगे। इस कार्य में समदृष्टि रखने वाले व्यक्ति हैं। 'मृतापत्यो ग्राह्यपुत्रो धन पुत्रोडथवा भवेत्।।'

लग्न से लेकर पाँचवी भाव में शुभ गृहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरु था शुभ गृह जो इस भाव से प्रभावित है, बच्चों के जन्म के लिए उचित माना जाता है । ऐसे उचित सूचनाएँ को इस जन्मकुण्डली में दिखाया गय है

रोग, शत्रु , मुसीबतें

छठा भाव रोग, शत्रु और विधों को सूचित करता है ।

छठ्ठा भावाधिपति दूसरे स्थान पर रहने से आप पराक्रमशील हैं और कीर्ति के मालिक हैं। परदेश गमन की संभावना रखते हैं। आप मधुरभाषी हैं। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन की संभावना है। आप सेहत से सशक्त और निरोगी रहेंगे।

छठा देव शनि गृह के साथ उपस्थित है । आपको धन सम्पति के नष्ट के बारे में अनावश्यक परेशनी होगा ।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति आठवें स्थान पर है। परम्परा से भिन्न प्रकार का विवाह होने की संभावना है। आप अपनी सहधर्मिणी से प्रभावित रहनेवाले व्यक्ति हैं। अन्य स्त्री के साथ ज़्यादा मिलना-जुलना, आप की पत्नी की इच्छा के विरुद्ध होगा। दफ़तरी कार्य से अथवा अन्य कारण से अनेक महिलाओं से मिलना जुलना होगा। अपने सहयोगियों से
सावधान रहने की हिदायत पत्नी से बार-बार मिलती रहेगी। इस हिदायत के अनुसार चलना पड़ेगा। संपूर्ण समर्पण भाव से रहनेवाली पत्नी होते हुए भी कभी-कभी वह शंका का कारण बन जा सकता है। आप की नियंत्रण सीमा को पार कर रही है ऐसा भ्रम उत्पन्न होगा। घर खर्च को लेकर अनेक वाद-विवाद होने की संभावना है। श्रेष्ठ मित्रों के माध्यम से इन विवादों का हल निकाला जायेगा। इस ग्रह की दशान्तर्दशा में पत्नी को शारीरिक कष्ट से गुज़रना पड़ जा सकता है।

पूर्व दिशा से सुयोग्य जीवन संगिनी प्राप्त होने की अधिक संभावना है।

सातवें स्थान पर गुरु की दृष्टि होने के कारण अनेक दोषपूर्ण फलों में कमी होग । अनेक लाभ भी होंगे।

दीर्घायु , मसीबतें

आठँवा भाव दीर्घायु, बैध्य चिकित्स और मुसीबतों को सूचित करता है ।

आठवें भावाधिपति के दूसरे स्थान पर रहने से स्वास्थ्य में कमी का भ्रम बना रहेगा। आर्थिक कार्यों से संबन्धित सभी कार्यों के प्रति सतर्क और जाग्रत रहना होगा। जो भी अपने हाथों से नष्ट होगा वह वापस उपलब्ध होना असंभव है। इस कारण जाग्रत रहना लाभदायक होगा।

चन्द्र आठवें स्थान पर रहा है। स्वयं उपार्जित धन का व्यय होगा फिर भी जीवनसाथी के माध्यम से धन उपार्जन होने की संभावना है। आँखों की बीमारी से बचने के लिए डाक्टरी सलाह आपके लिए अनिवार्य है। जलाशय से बचते रहना आवश्यक है। दमा से बचने की सावधानी रखना योग्य होगा।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति दूसरे स्थान पर है। आपके पिता स्वाधीन और शक्तिशाली व्यक्ति होंगे। आप एक श्रेष्ठ धनी पिता के पुत्र हैं। 'धनवान गुणवान कामी पंडितो जनवल्लभः' धनवान, गुणवान, कामी, विद्वान और लोकप्रिय होंगे।

आपके नौवे भाव में केतु स्थित है। इसलिए आप आडंबर-प्रिय होंगे। आपके स्वभाव में अधिकार और अहंकार का भाव रहेगा। दूसरों से शत्रु भाव भी रहेगा। यह होते हुए भी बडों के प्रति आदर भाव बना रहेगा। कार्यों को सुलझाने की शक्ति में बढावा होगा। पर आपको एक चतुर सहभागी जीवनसाथी की प्राप्त होगी। अन्य लोगों से जीवन में सुख और समृद्धि प्राप्त होगी। 'शिखी धर्मगः क्लेशनाशं करोति सुतार्थी.....' संतान से सुख मिलेगा।

नवमें भाव पर स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति अनेक सुख संपत्ति की प्राप्ती दिलानेवाला है। अनेक अनिष्ठ कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

हरा रंग आप के लिए भाग्योदय का कारण बन सकता है। आप हरे रंग की कोई वस्तु धारण करके महत्वपूर्ण व्यक्तियों से अथवा ऊँचे संस्थानों से मुलाकात करने जायें तो सफलता की आशा कर सकते हैं। आप प्रकाशन, दलाली या वैदिक काम से संबन्ध रखते हों तो हरा रंग धारण करने से भाग्योदय होगा। इन्टरव्यू और इम्तिहान के वक्त भी उपरोक्त कथन याद रखें। आप प्रकाशन कार्य, कानूनी कार्यक्षेत्र और शेयरबाज़ार में एमराल्ड पत्थर के प्रभाव से सफलता को अपनी और खींच पायेंगे। शिक्षा क्षेत्र में भी लाभ होगा।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आपके जन्मकुण्डली में दसवी भाव के स्वामी को बारहवी भाव पर स्थान दिया गया है । ब्रिहत्त पारासरा होरा के श्लोक यह सूचित करता है कि आपको सरकारी काम काज के बावजूत धन-नष्ट होगा । आपको अपने शत्रुओं पर भय होना चाहिए । आप चतुर और बुद्विशाली है लेकिन अनावश्यक कार्य के लिए चिन्ताग्रस्त रहते है ।

दसवी भाव तुला राशी है । यह एक सराहनीय चिनह् है जो शुक्र गृह की नियंत्रण में है । यह एक ऐसा चिनह् है जो दूरदृष्टि और निर्णय को सूचित करता है । यह चिनह् व्यापार के लिए श्रेष्ठ है । यह चिनह् मूल्याकंक, आधि व्यवसायी, किस्तबंदी की खरीद का व्यापार और कानूनी कामकाज को सूचित करती है । संगीत, सिनेमा, टेलीविज़न, रंग, रुई, जूट, वस्त्र, सुगन्ध द्रव्य, शृंगार सामान, चाँदी, चीति धायघर, बगबनी, फूलों की खेती और वनविध्या आपके लिए उचित है जहाँ आप सफलता पा सकते है । आप एक सफल हवाई कम्पनी की अफसर, पायलट, गायक था संगीत निर्माता बन सकते है । तुला राशी का राशी न्यायालय से सम्बधित उघोग के लिए श्रेष्ठ है ।

शनि गृह के गुण है सहनशीलता, दृढता, धर्य और विश्वास आपके जन्मकुण्डली में यह देखना जरूरी है आपके जन्मकुण्डली में सूर्य से

लेकर शनि गृह दसवी भाव में उपस्थित है । कुछ ज्योतिषियों का राय है कि आपको हमेशा सफलता प्राप्त होगा । कुछ निपुण लोग कहते कि दसवी भाव में शनि गृह की उपस्थिति यह सूचित करता है कि अपने उधोग में अनेक मुसीबतों सामना करेगा । अन्तिम जीत हमेशा आपकी होगा । आपका दृढप्रतिज्ञा हमेशा आपको मुसीबतों में पहुँचा देगा ।

सारावाली के श्लोकों के अनुसार जब शनि गृह को दसवी भाव उपस्थित किया जाता है तो वह धनिक, विद्वान और धैर्यशाली होगी । आप किसी संघटन, शहर या गाँव का नेता बन सकती है ।

वृशचिक राशी में उपस्थित शनि गृह निर्माण, और इजीनियरिंग क्षेत्र में आपके भाग्य को सूचित करती है । आपके लिए वैध सास्त्र भी उचित है मुख्यतः शल्य चिकित्सा ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

कारखानों में प्रबन्धक का पद, रसायनिक इंजीनियरिंग, रसायनिक उत्पनों का व्यापार, वकील, प्रतिरक्षा विभाग, सर्जन, राजत्यन्तर स्वास्थ्य सेवाएँ, गहने, बिजली द्वारा चाँन्दी सोना आदि चढ़ाना ।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गें को सूचित करता है ।

एकादशेश के चौथे स्थान पर रहने से मातृपरिवार के माध्यम से लाभ होगा। भक्तिमय कार्यों से आनन्द प्राप्त होगा। स्थायी ज़मीन, मकान इत्यादि का स्वामित्व प्राप्त होने की संभावना है। मातृ सुख के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। शय्या सुख उत्तम प्राप्त होगा।

शनि ग्यारहवें स्थान पर रहा है। आप नए-नए पकवान खाने के शौकीन हैं। आप श्रेष्ठ और उच्चकोटि के कार्य संभालने में उत्साही रहेंगे। आप संपत्ति के मालिक हैं। आप दीर्घायु भी हैं।

ग्यारहवी देव केन्द्र स्थान पर है । आप धन और संम्पति पा सकते है ।

खर्च , व्यय, नष्ट

बारहवी भाव खर्च और नष्ट के बारे में सूचना देते है

बारहवाँ भावाधिपति तीसरे स्थान पर रहने से स्वरक्षा के बारे में सदा सतर्क रहने वाले व्यक्ति हैं। स्वार्थी हैं ऐसे आक्षेप होंगे। श्रेष्ठ मित्रों का अभाव रहेगा। अन्य जनों के प्रति द्वेषपूर्ण वृत्ति से मुक्त रहने का प्रयत्न करना ही आपके लिए लाभदायी होगा। बन्धुओं से अधिक सुख की आशा करना व्यर्थ होगा।

शुक्र बारहवें स्थान पर रहा है। इस कारण प्रेम अभिव्यक्त करने की कला में निपुणता होगी। कुसंग से बचने के लिए जाग्रत रहना आवश्यक है। अन्य की अपेक्षा में आप चतुर और बुद्धिमान होंगे। धन, संपत्ति और ऐश्वर्य से परिपूर्ण रहेंगे।

अनुकूल समय

उधोग या पेश के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दसवी अधिपति, दसवी भाव और लग्न में उपस्थित शुभ गृह, लग्न और दसवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय उधोग के लिए अनुकूल है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	राहु	15-09-1999	15-09-2002	अनुकूल
शुक्र	गुरु	15-09-2002	16-05-2005	अनुकूल
शुक्र	शनि	16-05-2005	15-07-2008	उचित
शुक्र	बुध	15-07-2008	16-05-2011	अनुकूल
शुक्र	केतु	16-05-2011	15-07-2012	अनुकूल
रवि	शनि	22-05-2015	03-05-2016	अनुकूल
रवि	शुक्र	16-07-2017	16-07-2018	अनुकूल
चन्द्र	शनि	15-10-2022	15-05-2024	अनुकूल
चन्द्र	शुक्र	16-05-2026	15-01-2028	अनुकूल
मंगल	शनि	06-12-2030	15-01-2032	अनुकूल
मंगल	शुक्र	09-06-2033	09-08-2034	अनुकूल
राहु	शनि	21-08-2040	28-06-2043	अनुकूल
राहु	शुक्र	02-02-2047	01-02-2050	अनुकूल

विवाह के लिए अनुकूल समय

सातवी अधिपति, सातवी भाव में उपस्थित गृह जैसे शुक्र, राहु, चन्द्र , बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय विवाह के लिए अनुकूल दिखाई पढ़ता है ।

१८ उम्रे से लेकर ५० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	गुरु	15-09-2002	16-05-2005	उचित
शुक्र	शनि	16-05-2005	15-07-2008	अनुकूल
शुक्र	बुध	15-07-2008	16-05-2011	अनुकूल
शुक्र	केतु	16-05-2011	15-07-2012	अनुकूल
रवि	चन्द्र	02-11-2012	03-05-2013	अनुकूल
रवि	राहु	08-09-2013	03-08-2014	अनुकूल
रवि	गुरु	03-08-2014	22-05-2015	अनुकूल
रवि	शुक्र	16-07-2017	16-07-2018	अनुकूल
चन्द्र	मंगल	16-05-2019	15-12-2019	अनुकूल
चन्द्र	राहु	15-12-2019	15-06-2021	उचित
चन्द्र	गुरु	15-06-2021	15-10-2022	उचित
चन्द्र	शनि	15-10-2022	15-05-2024	अनुकूल
चन्द्र	बुध	15-05-2024	15-10-2025	अनुकूल
चन्द्र	केतु	15-10-2025	16-05-2026	अनुकूल
चन्द्र	शुक्र	16-05-2026	15-01-2028	उचित
चन्द्र	रवि	15-01-2028	15-07-2028	अनुकूल
मंगल	राहु	11-12-2028	30-12-2029	अनुकूल
मंगल	गुरु	30-12-2029	06-12-2030	अनुकूल
मंगल	शुक्र	09-06-2033	09-08-2034	अनुकूल
मंगल	चन्द्र	15-12-2034	16-07-2035	अनुकूल

व्यापार के लिए अनुकूल समय

दूसरा, नौवाँ, दसवी और ग्यारहवी अधिपति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि , और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय व्यापार के लिए अनुकूल दिखाई पड़ता है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	राहु	15-09-1999	15-09-2002	अनुकूल
शुक्र	गुरु	15-09-2002	16-05-2005	उचित
शुक्र	शनि	16-05-2005	15-07-2008	उचित
शुक्र	बुध	15-07-2008	16-05-2011	उचित
शुक्र	केतु	16-05-2011	15-07-2012	अनुकूल
रवि	मंगल	03-05-2013	08-09-2013	अनुकूल
रवि	गुरु	03-08-2014	22-05-2015	अनुकूल
रवि	शनि	22-05-2015	03-05-2016	अनुकूल
रवि	बुध	03-05-2016	10-03-2017	अनुकूल
रवि	शुक्र	16-07-2017	16-07-2018	अनुकूल
चन्द्र	मंगल	16-05-2019	15-12-2019	अनुकूल
चन्द्र	गुरु	15-06-2021	15-10-2022	अनुकूल
चन्द्र	शनि	15-10-2022	15-05-2024	अनुकूल
चन्द्र	बुध	15-05-2024	15-10-2025	अनुकूल
चन्द्र	शुक्र	16-05-2026	15-01-2028	अनुकूल
मंगल	राहु	11-12-2028	30-12-2029	अनुकूल
मंगल	गुरु	30-12-2029	06-12-2030	उचित
मंगल	शनि	06-12-2030	15-01-2032	उचित
मंगल	बुध	15-01-2032	11-01-2033	उचित
मंगल	केतु	11-01-2033	09-06-2033	अनुकूल
मंगल	शुक्र	09-06-2033	09-08-2034	उचित
मंगल	रवि	09-08-2034	15-12-2034	अनुकूल
मंगल	चन्द्र	15-12-2034	16-07-2035	अनुकूल
राहु	गुरु	28-03-2038	21-08-2040	अनुकूल
राहु	शनि	21-08-2040	28-06-2043	अनुकूल
राहु	बुध	28-06-2043	14-01-2046	अनुकूल
राहु	शुक्र	02-02-2047	01-02-2050	अनुकूल

गृह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथा अधिपति, शुभ गृह जिसका दृष्टि चौथा भाव और चौथा अधिपति पर है, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय गृह निर्माण के लिए अनुकूल दिखाई पजता है ।

१५ उम्रे से लेकर ८० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
रवि	मंगल	03-05-2013	08-09-2013	अनुकूल
चन्द्र	मंगल	16-05-2019	15-12-2019	अनुकूल
मंगल	राहु	11-12-2028	30-12-2029	अनुकूल
मंगल	गुरु	30-12-2029	06-12-2030	अनुकूल

मंगल	शनि	06-12-2030	15-01-2032	अनुकूल
मंगल	बुध	15-01-2032	11-01-2033	अनुकूल
मंगल	केतु	11-01-2033	09-06-2033	अनुकूल
मंगल	शुक्र	09-06-2033	09-08-2034	अनुकूल
मंगल	रवि	09-08-2034	15-12-2034	अनुकूल
मंगल	चन्द्र	15-12-2034	16-07-2035	अनुकूल
राहु	मंगल	27-06-2052	16-07-2053	अनुकूल
गुरु	मंगल	16-03-2066	20-02-2067	अनुकूल

दशा अपहार फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते है। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

सूर्य दशा

इस दशा में अत्याग्रही बनकर धन कमाने की इच्छा होगी। दयाभावना की मनोदशा क्षीण होगी। विरोधियों का होना संभव है। उनपर विजय प्राप्त होने की संभावना है। आत्मप्रशंसा सुनना पसन्द होगा। परिवार की भलाई के लिए काम करना प्रिय होगा। परिवार में उन्नति और श्रेय प्राप्त होगा। इस दशा में जानवरों या ज्वर से पीड़ा होने की संभावना है। आंखों, दाँतों और पेट संबन्धी रोग हो सकते हैं और अभी से उनपर ध्यान देना अच्छा होगा। पारिवारिक जीवन पर ज़रा अधिक ध्यान देना होगा। पूज्य जनों तथा अन्य प्रधान व्यक्तियों से मतभेद होने की संभावना है। अपने अधीन में काम करनेवाले लोगों की वजह से आर्थिक संकट में पड़ सकते हैं। आप यदि शिक्षण कार्य में लगे हुए हैं तो श्रेष्ठ उपाधि और सम्मान प्राप्त होने की संभावना है। यात्रा होने का योग बनेगा।

सूर्य वर्गीय शक्ति विहीन स्थिति में रहा है। आत्मा की निर्बलता, पिता के उत्कर्ष में बाधा आदि फल घटने की संभावना है। ईश्वर मनन और पिता की सेवा करें।

आन्तरिक शक्ति में दुर्बलता का भ्रम उत्पन्न हो सकता है। इस भ्रम से जितना ही जल्द हो निकल सके तो योग्य होगा। अन्यथा स्वास्थ्य में अस्थिरता उत्पन्न होने की संभावना है। उदररोग, दाँत के रोग और नेत्र रोगों से पीड़ित होना पड़ेगा। पिता से मतभेद हो सकता है। पिता के स्वास्थ्य में दुर्बलता उत्पन्न होने की संभावना है। बुज़ुर्गों से या सरकारी अफसरों से कोई न कोई समस्या पैदा होती रहेगी। स्थान पद हानि और मान हानि भी संभव है। इस कारण सजग रहना अनिवार्य है। यह बुद्धिगम्य होगा।

∇ (08-09-2013 >> 03-08-2014)

सूर्य दशा में राहू की अन्तर्दशा में आपके मन में शंकाएँ होती रहेगी। खर्च में वृद्धि का योग है। रक्त की कमी से होनेवाला पीलेपन या वात संबन्धी रोग होने की संभावना है। व्यय हमेशा बढ़ता रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र से वंचित होने का भय सतायेगा। अपने पूज्य जनों की तन्दुरुस्ती के लिए मन चिंतित रहेगा।

∇ (03-08-2014 >> 22-05-2015)

सूर्य दशा में बृहस्पति के अपहार में आप की तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। आप अपने सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। आपके शत्रु और आपकी बुराई करने वाले कुछ न कर पायेंगे। उन्नति और प्रगति आपका साथ देगी। प्रत्येक काम में आशातीत सफलता प्राप्त होगी।

∇ (22-05-2015 >> 03-05-2016)

सूर्य दशा में शनिचर के प्रहारों में कष्ट और परेशानी का सामना करना होगा। आपको भय रहेगा कि आपकी शक्ति और योग्यता नष्ट हो रही है। दूसरों की सहायता एवं आदर प्राप्त होने की आशा निराशा में परिणित होगी। आप स्वयं उदास रहेंगे। आंखों की जाँच करवाना लाभदायी होगा। अपने नियंत्रण में रही हुई वस्तु से वंचित होना पड़ेगा। आलस्य की अधिकता से बचपाना संभव नहीं जान पड़ता।

∇ (03-05-2016 >> 10-03-2017)

सूर्य दशा में बुध की अन्तर्दशा में चर्मरोग हो जाने की संभावना है। काम में ध्यान न रहना भी अनुभव होगा। यह स्थिति आगे बढ़ेगी तो आपको अनेक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। अनेक खण्डनात्मक कार्यों की ओर मन लुभायेगा। इसलिए सावधान रहना उचित होगा। अध्ययन, लेखन और प्रकाशन संबन्धी कार्य में सफलता सरलता से प्राप्त होगी।

∇ (10-03-2017 >> 16-07-2017)

सूर्य दशा में केतु की अन्तर्दशा में आपको अपना वर्तमान स्थान छोड़कर किसी दूर देश में जाने का विचार होगा। अपना सब कुछ छोड़कर जाने की इच्छा होगी। कई कार्य आप के विरुद्ध एवं असंतोष पैदा करनेवाले होंगे। रुकावटें और निराशाएँ अधिकाधिक होती रहेगी। मन को दृढ़ रखने की कोशिश करना हर मनुष्य का कर्तव्य हैं। आत्मविश्वास बढाने की चेष्टा करें।

∇ (16-07-2017 >> 16-07-2018)

सूर्य दशा में शुक्र के अपहार में आपको शारीरिक स्वास्थ्य की थकावट और निर्बलता का अनुभव होगा। समय समय पर सिरदर्द भी होता रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में प्रगति प्राप्त कर पायेंगे। खेलकूद, मनोरंजक यात्रायें और प्रणय संबन्धों में गति तेज होना संभव है। सतर्क रहें।

चंद्र दशा

इस दशामें आध्यात्मिक और भक्ति कार्यों में आपका अधिक ध्यान बंट जाएगा। उससे सुख और शान्ति मिलेगी। अपनों से बड़ों का आदर किया जायेगा। सुख और समृद्धि बढ़ेगी। औरतों से मिलजुल कर रहने का स्वभाव रहेगा। खान-पान में कुछ नियमित परिवर्तन होगा। अपनी तन्दुरुस्ती की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देना है। थकान का अनुभव होने की संभावना है। शरीर की सन्धियों में दर्द हो सकता है। नये मकान के निर्माण और ऐश्वर्य प्राप्ति का योग है। परिवार में विवाह कार्य होने की संभावना है। युवतियों की ओर आकर्षित होने की संभावना है। हड्डियों की बीमारी से बचते रहना अच्छा है। माता से संबन्धित फल प्राप्त होने की संभावना है। २० से ३० वर्ष की आयु के मध्य यदि यह दशा पड़े तो इस दशा में विवाह होने व संतान सुख प्राप्ति का सुयोग प्राप्त होता है।

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा बलवान है। इस कारण घर में मांगलिक कार्य, वाहन प्राप्ति, भाग्योदय, धन प्राप्ति आदि फल प्राप्त होंगे।

सुखीजीवन, मन उमंग और उत्साह से भरा रहेगा। पहले से अधिक शान्ति और सुख का अनुभव होगा। फूलों से और सुगन्धित वस्तुओं से आनन्द मिलेगा। पदोन्नति और आमदनी में वृद्धि होगी। दूसरों से विशेषकर औरतों की सहायता प्राप्त होना संभव है। चाँदी, मोती, रत्न, ईख, जल आदि सफ़ेद वस्तुओं से लाभ मिलने की संभावना है। श्रेष्ठ फल पश्चिमोतर दिशा से प्राप्त होगा। मिठाई खाने का योग है। समुद्र तल से मिलनेवाली वस्तुओं से लाभ होगा।

∇ (16-07-2018 >> 16-05-2019)

चन्द्र दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा में विवाह आसानी से हो सकता है। बच्चे के जन्म के लिए भी यह अच्छा समय होता है। पारिवारिक जीवन भी अच्छा रहेगा। अपने प्यारे मित्रों से पुरस्कार एवं सहकारिता प्राप्त होगी। मनोरंजन के लिए भी समय प्राप्त होता

है। माँ के लिए भी अच्छा समय है। आमोद प्रमोद विषय में भी यह समय उत्तम फल कारक होगा।

∇ (16-05-2019 >> 15-12-2019)

चन्द्र की दशा में मंगल की अन्तर्दशा में आप को आग से कष्ट होने की संभावना है। इसलिए सावधानी से रहना अच्छा होगा। व्यापार में लगे हुए हैं तो सावधानी के रूप में बीमा निकालना लाभदायी हो सकता है। स्थान को बदलना या तबादले की संभावना है। अनेक अपवादों और ईर्ष्यालु व्यक्तियों का सामना करने की तैयारी कर लेना अच्छा होगा।

∇ (15-12-2019 >> 15-06-2021)

चन्द्र दशा में राहू की अन्तर्दशा में आपको मानसिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। उनमें से अधिकतर अकारण ही होती रहेगी। परेशानी के लिए दूसरा कारण है बीमारी और शत्रुओं का आक्रमण। आँधी या वर्षा के समय में यात्रा करने में सावधानी रखनी पड़ेगी। आपके मित्रों एवं संबन्धी लोगों के कारण मन की शान्ति नष्ट होगी। उनके सुख दुःख की चिन्ता सतायेगी।

∇ (15-06-2021 >> 15-10-2022)

चन्द्र दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा में आप आदर्शों में पहले से ज़्यादा स्थिर बनेंगे। निवासस्थान की सुविधा बढ़ाने तथा नवीनीकरण के लिए आप धन और समय दोनों का उपयोग करेंगे। व्यक्तिगत रूप से सौन्दर्य का भी लालन पालन होगा। आप के प्यारे मित्रों का संपर्क एवं सम्मान आपको प्राप्त होगा। मन को आनंद और उत्साह प्राप्त करानेवाले मेहमानों का आगमन होगा। अनेक तरह के उपहार प्राप्त होने का योग है। सचमुच यह आपके लिए श्रेष्ठ समय है।

∇ (15-10-2022 >> 15-05-2024)

चन्द्र दशा में शनिचर की अन्तर्दशा चल रही है। इस समय परिवार में कोई विशेष अप्रिय घटना घटित होने की संभावना है। आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला व्यवहार मित्रजन और परिवार के लोगों से उत्पन्न होगा। दुर्घटनायें एवं असुविधाओं की संभावना है। माता या माता तुल्य पूज्य महिला को कष्ट की संभावना है। यह टालना मुश्किल है।

∇ (15-05-2024 >> 15-10-2025)

चन्द्र की दशा में बुध की अन्तर्दशा में अनेक आनन्दपूर्ण घटना घटित होगी। यह एक अच्छा समय है। ईश्वर के अनुग्रह से आप के भाग्य में रचनात्मक परिवर्तन दिखाई देगा। आप अभी से कठिन परिश्रम करें तो आपकी सफलता निकट ही है। रुके हुए काम सफल होंगे। धन, सुख सुविधा और संबन्धों में वृद्धि होगी।

∇ (15-10-2025 >> 16-05-2026)

चन्द्र दशा में केतु की अन्तर्दशा के योग से आपको मानसिक शान्ति मिलेगी और भयमुक्त दशा प्राप्त होगी। आत्मविश्वास भी बढ़ता रहेगा। आपका मन अयोग्य कार्यों के प्रति आकर्षित होगा। आप सजग न रहें तो कई कष्टों का होना संभव है।

∇ (16-05-2026 >> 15-01-2028)

चन्द्र दशा में श्शुक्र की अन्तर्दशा के योग से आपको स्त्री-पुरुषों के बीच समूह में कार्य करने का मौका प्राप्त होगा। सामूहिक सहकार्यकरों के साथ कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। विवाह या प्रेम संबन्ध के लिए उत्तम समय है। भू, भवन व वाहन के सुख में वृद्धि होगी। सहकारी कार्यों में प्रवेश करने का यह अच्छा अवसर हैं। लोगों के बीच मान्यता प्राप्त होगी। अन्य लोगों के आकर्षण का आप केन्द्र बन जायेंगे। ई.एन.टी. विकार से बचने का प्रयत्न होना चाहिए।

∇ (15-01-2028 >> 15-07-2028)

चन्द्र दशा में सूर्य का अपहार आपको प्रोत्साहन एवं बहुमान्यता आसानी से प्राप्त करायेगा। आप को आत्मार्थभाव से अधिक परिश्रम

करने की इच्छा पैदा होगी। सभी तरह के भौतिक सुख आपको प्राप्त होंगे। शत्रुलोग आप से पीछे हट करेंगे। आप की सफलता निश्चित है। प्रगति के बहुमुखी रास्ते उपलब्ध होंगे। सरकारी कामों में सफलता प्राप्त होगी।

मंगल दशा

इस दशा में बहुत सा धन कमाया जाएगा। कठिन परिश्रम भी करना पड़ेगा। पशु पक्षियों से बड़ा लाभ होगा। बच्चों या भाइयों से झगड़े हो सकते हैं। दुराचारी औरतों के संपर्क में रहने की संभावना है। फिज़ूल खर्च होनेवाला है। आग से नुकसान न होने के लिए ध्यान देना होगा। शरीर में थकावट और पीलापन होने की संभावना है। स्वास्थ्य का बराबर परीक्षण कराना अथवा आवश्यक दवाएँ लेना उचित रहेगा। सामान्यतः यह दशा सुखमय रहेगी और आपकी आशाओं की पूर्ति करेगी। धन संपादन कार्य में अभिरुचि रहेगी। पिता और गुरुजन के प्रति अभद्र व्यवहार करने की संभावना है। मलिन और हीन वृत्ति के लोगों से मिलना जुलना पड़ेगा। व्यर्थ के धन खर्च से बचना उचित होगा। अग्नि और दुर्घटना से बचते रहना होगा। कुज की दशा में पुरुष अति उन्नति प्राप्त कर सकता है। पत्नी और पुत्र के साथ झगड़ा हो सकता है। अकारण क्रोधित होने की संभावना है। सामान्य सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

मंगल जन्म कुण्डली में बलवंत रहता है तब अनुकूल स्थिति पैदा होती है और जातक अनेक शुभ फल प्राप्त करता है। राज्य-भूमि, धन और वाहनादि की प्राप्ति सरलता से हो सकती है। मित्र व बन्धुओं का सहयोग मिलेगा।

जन्म कुण्डली में मंगल द्वारा रुचक योग बना है। इसके प्रभाव से मंगल दशा में स्वपराक्रम से धन वृद्धि, शत्रु की पराजय और युद्ध में विजय आदि फल मिलेंगे।

भाई और उच्चधिकारियों से बहुत सहायता प्राप्त होगी। अन्य लोगों से भी सहयोग और सुविधाएँ प्राप्त होगी। यह दशा काल बहुत लाभदायक होगा। अधिकारियों का अनुमोदन प्राप्त होगा। सेना, पुलिस या इसी प्रकार के अनुशासित विभागों से संपर्क हो सकता है। इस दशा में आपकी पदोन्नति होगी। ज़मीन, सोना ताम्बा, आभूषण आदि मिलेंगे। दक्षिण की ओर यात्रा करने और लाभान्वित होने की संभावना है। स्वस्थ शरीर और स्वच्छता में विश्वास रहेगा। अपनी दृढ़ता से अपना जीवन धन्य होगा। नये मकान के निर्माण कार्य में अभिरुचि जागेगी। हर विपत्ति का सामना करने में आप समर्थ हैं।

∇ (15-07-2028 >> 11-12-2028)

मंगल दशा में मंगल के अपहार में अनेक दोषयुक्त घटनायें घटित होगी। जाग्रत रहने से अनेक ऐसी घटनाओं से बच सकते हैं। धारयुक्त हथियारों का इस्तेमाल करते हुए सजग रहें। शारीरिक खतरे की संभावना है। बिना कारण के आप अपने निकट के मित्रों से भी नाराज़ होंगे। व्यर्थ के शत्रु उत्पन्न होंगे। दूसरों की संपत्ति हांसिल करने की इच्छा होगी। जीवन में निराशा जनक रुकावटें भी हो सकती है। उनका निवारण अनिवार्य होगा।

∇ (11-12-2028 >> 30-12-2029)

मंगल दशा में राहू की अन्तर्दशा में अविचारित व्यक्तियों से धोखा होने की संभावना है। चूल्हे, बिजली या सवारियों से दुर्घटनाएँ हो सकती है। इस समय खतरे की संभावना है। इस काल में होनेवाले खतरों से जाग्रत रहने की आवश्यकता है। समय समय पर विशेषज्ञों से परामर्श उपयोगमय बनेगा। जागृति से काम करें तो आपत्तियाँ और हानियाँ कम होगी। मारक आयुध और विस्फोटक वस्तुओं से दूर रहें। रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टरी सलाह अनिवार्य है।

∇ (30-12-2029 >> 06-12-2030)

मंगल दशा में बृहस्पति के अपहार में आपका मन दृढ़ रहेगा और सभी कार्य उत्साह से किए जाएँगे। आनन्दपूर्ण चिंतन से मन उल्लासित रहेगा। आप तीर्थ स्थानों की यात्रा करेंगे। इस समय अनेक पण्डितों से परिचित होना पड़ेगा। आर्थिक उन्नति होनेवाली है। कर-विभाग से कोई समस्या खड़ी हो सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

∇ (06-12-2030 >> 15-01-2032)

मंगल दशा में शनि के अपहार में चिंतन का नियन्त्रण करना मुश्किल है। मन में तरह तरह के विचार आते रहेंगे। पहले जैसे कोई काम करने में धैर्य नहीं रहेगा। व्यर्थ का भय उत्पन्न होगा। व्यर्थ की उत्कण्ठा से मन उद्वेगपूर्ण रहेगा। हर जगह खतरे की आशंका उत्पन्न होगी। मन शंका-कुशंका के कारण अस्थिर रहेगा। ईश्वर पर भरोसा रखना ही एक मात्र श्रेष्ठ मार्ग हैं। इस दशा के बाद तकलीफें कम होगी।

∇ (15-01-2032 >> 11-01-2033)

मंगल दशा में बुध के अपहार में दुष्टों का त्रास सहना पड़ेगा। अधर्मी और नीच प्रवृत्ति के लोग आप के विरुद्ध क्रियाशील रहेंगे। अचरज की बात होगी कि आप उन सब पर विजय पाएँगे। अदृश्य आध्यात्मिक शक्ति आप की सहायता करेगी। अपना निवासस्थान अधिक सुविधा जनक बनाया जायेगा। नये मकान के निर्माण की भी संभावना है।

∇ (11-01-2033 >> 09-06-2033)

मंगल दशा में केतु की अन्तर्दशा में आपको बिजली से संचालित उपकरणों से खतरा पैदा हो सकता है। नित्य उपयोग में लिए जानेवाले बिजली के उपकरणों की जाँच करवाना लाभदायक होगा। उदर रोग से पीड़ित होने की संभावना रखते हैं। भोजन में नियन्त्रण लाना अनिवार्य होगा। कृमि विकार संभव है।

∇ (09-06-2033 >> 09-08-2034)

मंगल दशा में शुक्र की अन्तर्दशा आपको अनियन्त्रित रखेगी। आप जल्दी से अकारण नाराज़ हो जाएँगे। परिवार से अलग रहना पड़ेगा। मारक आयुध से दूर रहें। कौटुँबिक वातावरण अच्छा रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। किसी के वियोग की संभावना है। विपरीत लिंग का परिचय बद्नामी कारक हो सकता है।

∇ (09-08-2034 >> 15-12-2034)

मंगल दशा में सूर्य के अपहार में आपकी प्रतिष्ठा और अधिकार में वृद्धि होगी। आप को अधिकार और वारीसी में संपत्ति की उपलब्धि होगी। यह आप के लिए जनसम्मति एंव मान्यता का समय है। फिर भी स्वजनों से शत्रुता का अनुभव होगा। राजकार्य में सफलता प्राप्त करना सरल होगी।

∇ (15-12-2034 >> 16-07-2035)

मंगल दशा में चन्द्र का अपहार आपको सहज सफ़लता प्राप्त करवायेगा। कई तरह के लाभ भी प्राप्त होंगे। प्रगति होगी। जो आपके विरोधी थे वे आपके दोस्त बन जायेंगे। आप से दूर भागनेवाले आप के निकट आयेंगे। अप्रतिक्षित दिशाओं से अनेक प्रकार की सहायता प्राप्त होगी। उच्च अधिकारियों और बडों से मान्यता प्राप्त होगी। इस काल में संतोष और सौभाग्य दोनों का साथ बना रहेगा। घर में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा।

राहु दशा

राहु जुआ और कल्पनाओं का देवता है। इस दशा काल में व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन और बुराइयाँ आ सकती है। परिवार के लोग और साथी लोग आपको शंका की दृष्टि से देखेंगे। इस काल में किसीसे झगड़ा न हो इसकी ओर ध्यान देना है। रोगों से पीड़ा होने की संभावना है। विषबाधा से बचने की कोशिश करनी है। विरोधियों से आपको सामना करना होगा। रिश्तेदार भी विरोधी बनने की संभावना रखते हैं। उच्च अधिकारियों का अनुग्रह कम होगा। गले में दर्द और आँखों के रोग होने की संभावना है। ई.एन.टी डाक्टर के उपदेश के अनुसार रोग होने से पहले ही उपचार करना अच्छा होगा। राहु सब के लिए एक सा नहीं होता। अच्छे स्थान पर हो तो सन्तान सुख, समृद्धि और सब प्रकार के ऐश्वर्य देनेवाला होता है। चर्म रोग से पीड़ा अनुभव होगी। विवाहित होने पर पत्नी और

संतान का कुछ दुख सहना होगा। राहुदशा जब बालावस्था काल में आती हैं तो अभ्यास क्षेत्र में विक्षेप अनुभव होता है। दांत की पीड़ा हो सकती है। ज़हरीली वस्तुओं से बचना आवश्यक है। सचेत रहना होगा। शत्रुओं के आक्रमण से सजग रहना होगा। बड़ों से मिलते सहयोग में क्षति होगी। इस काल में भक्तिपूर्ण जीवन शाँति प्रदान करता है। धन की अल्पता मानसिक सुख की कमी, असंतोष की अधिकता, शत्रु से विवाद और अत्यधिक आपसी आदि फल प्राप्त होंगे।

∇ (16-07-2035 >> 28-03-2038)

राहू दशा में राहु की अन्तर्दशा में आपका समय अच्छा नहीं होगा। परिवार में किसी भी तरह का वियोग हो सकता है। दुःखी होना पड़ेगा। आपको निराशा और दुःख स्वयं नियन्त्रित करना होगा। आपके संबन्धियों को भी सुख एवं दुःख दोनों के मिश्रणयुक्त फल की प्राप्ति होगी। विदेशागमन की प्रतीक्षा रखने में निराशा का अनुभव हो सकता है। इच्छानुसार सुख का अभाव हो सकता है।

प्रारंभ से **16-07-2053**

गुरु दशा

इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। परिवार के बड़े या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूल भाव बना रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। ई.एन.टी से संबन्धित रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टर से संपर्क करना उचित होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। जीवन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। अविवाहित लोगों के लिए विवाह के लिए और संतान प्राप्ति के लिए यह उचित समय माना जाता है। कोई सरकारी कार्य आपके हाथों में सौंपा जायेगा। सफलता और कीर्ति आपके पाँव चूमेगी। उच्च अधिकारियों से और बड़ों से प्रशंसा प्राप्त होगी। वे आपके कार्य से संतुष्ट होंगे। मित्रजनों से आनंद मिलेगा। यह सुख होते हुए भी कुछ मित्रों से बिछड़ना पड़ सकता है। गुरुदशा का आरंभकाल कष्टमय और अंतिम काल सुखद हो सकता है।

गुरु बलवंत रहने से अनेक शुभ फल की प्राप्ति होगी। राज्यलाभ, ज्ञान वृद्धि,, व्यवसाय वृद्धि और पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

इस दशाकाल में शिक्षा या ज्ञान पाने की बड़ी इच्छा होगी। अपना पूरा समय इस में लगाकर स्कूल में या कालेज या समाज में प्रसिद्ध बनने का अच्छा मौका है। इस दशा के उत्तरार्द्ध में सन्तान सुख और संपत्तिसुख प्राप्त होगा। आपका जीवन सुखमय रहेगा। किसी तीर्थयात्रा में या धार्मिक त्योहार में भाग लेना संभव है। पीले रंग की वस्तुएँ जैसे की सोना, पीतल आदि भाग्य सूचक हैं। विवेक और गंभीरता में वृद्धि होगी। बड़प्पन प्राप्त होगा।

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने मगह नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र अधिपति केतु है । आप जीवन में हमेशा स्वाभिमानी होगों । यह आपके प्रयोगिक जीवन में उच्च स्थान तक पहुँचने के लिए रुकावट बन जाएगा ।
जन्म नक्षत्र के आधार पर कुछ गृहों का दाश आपके लिए प्रतिकूल है । मंगल नक्षत्र होने के बावजूद सूर्य, मंगल और गुरु दाश में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस समय आपके विचार में अनेक प्रकार का प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखाई पड़ेगा । ऐसा परिस्थिति भी होगा जब आप दूसरों से आज्ञाकारी बनने के लिए मज़बूर हो जाएगो । वैवाहिक जीवन में विश्वसनीय रहना होगा । अपने आर्थिक व्यवस्था को ध्यान में रखकर ही दूसरों को सहायता का वादा देना चाहिए । इस समय हर सुख विलास में अधिक दिलचस्पी होगा ।

सिंह जन्म राशी का अधिपति सूर्य है । जीवन में ऐसा परिस्थिति भी होगा, जब आपको अपने उत्सुकता और धैर्य प्रदार्शित करना पड़ेगा । हमारा विचार और कार्य दूसरो पर कैसे प्रभावित हो रहा इस पर विचार करना अच्छा होगा । उत्तर फालगुनी. चित्रा, विशाखा, पूर्व भद्रपाठा नक्षत्र सामान्य रुप से अनुकूल नहीं होगा ।

इस प्रतिकूल दाश में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यतः विरुद्व नक्षत्रों पर । अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें । इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे ।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादों की प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते है ।

प्रतिकूल दाश में गणेश भागवान -(जो रुकावटों को दुर करता है) से प्रार्थना करना लाभदायक है । मगह, अशविनी और मूल नक्षत्र के दिवस पर मंदिर में दर्शन करना शुभ माना जाता है। वह दिन जब मगह नक्षत्र और रविवार साथ आता है, विशिष्ट महत्व से उपवास रखना अच्छा होगा ।

फल सिद्दि के लिए रोज नक्षत्र का अधिपति केतु की पूजा करना चाहिए । लाल रंग के वस्त्रों को पहनने से आप केतु को प्रसन्न कर सकते है ।

इसके अलावा सूर्य को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठानों का पालन करना लाभदायक है ।

मगह नक्षत्र का देव पूर्वज है । पूर्वजों को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र को विश्वास से अलापन करना चाहिए।

१ ऊ पित्रभ्याह स्वधायिभ्यः स्वदा नमः
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वदा नमः
प्रपिता महेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वदा नमः
अक्क्षन्न पितरोमीमदान्ते पितरो तीतृपन्त
पितरः पितरः सुन्दध्वाम्

२ ऊ पितृभ्यो नमः

कर्क माँस में बलि और धार्मिक अनुष्ठानों को कारना चाहिए । इसके अलावा, जानवरों,पक्षियों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है । मुख्यतः मगह नक्षत्र का जानवर चूहा का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपके जीवन में ऐश्वर्य और समृद्दि प्राप्त होगा ।मगह का औधोगिक पेड, बरगड पेड और उसके शाखओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी , चकोर पक्षी को पीड़ा नहीं देना चाहिए । मगह नक्षत्र का मूलतत्व जल है । जल देव की पूजा करना चाहिए और देवों की अनुग्रह प्राप्त करने के लिए जल को दूषित करने वाले कार्यों से दूर रहना चाहिए ।

दाश परिहार

दश के हानिकारक प्रभावो का परिहार

हर गृह के दाश में भाग्य और निर्माग के सामान्य झुकाव जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों पर आधारित है । गुणकारक और हानिकारक गृहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कुछ दाश समय आपके लिए अनुकूल नही है । प्रतिकूल दाश समय के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का आचरण करना पडेगा ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित प्रतिकूल दाश समय और उसके लिए किए जाने वाले धार्मिक विधियों के बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

दशा :रवि

अभी आप रवि दाश से गुजर रहे है ।

आपका जन्म नक्षत्र मघा है । ?ड्ढ्ढ्ब्ण रवि फराशी में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के अनुसार आपको सूर्य दाश में प्रतिकूल स्थितियों को भोग्ना पडेगा । इस समय आपको अनेक मुसीबतों का सामना करना पडेगा । ऐसे स्थिति पर आपको स्वंय नियंत्रण रखना चाहिए । दूसरो के साथ बातचीत में अनुचित वाक्यो का प्रयोगों या उपयोग नहीं करे, इसके लिए ध्यान रखना चाहिए ।

सुर्य दाश के हानिकारक प्रभावों की तीव्रता सूर्य के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब सुर्य प्रतिकूल स्थान पर है जो मुतीबतें आपको सामना करना पडेग उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

जब सूर्य कमज़ोर है आपको अपने करीब साथियों और रिश्तेदारो से अलग होने की प्रवृत्ति होगा । आपको सार्वजनिक मंच पर शमिल होने के लिए मुसीबत लगेगा । जब आपको सहायाता और संयोग की जरुरत हो तब कोई भी दोस्त या रिश्तेदार आपका साथ नहीं देगों ।

इस समय पर आपको काफी मान्यता नहीं मिलेगा । अपने प्रिय लोगों से अलग होगों । ऐसे प्रतिकूल स्थिति पर आप दूसरों से दूर रहना चाहते है ।

अनावश्यक प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आप असंतुष्ट होगों । आपका अपेक्षपाती स्वभाव अनावश्यक संदेह की और ले जाएगा । अतः यह आपके दोस्ती को थोड़ देगा ।

इस समय दूसरों को मूल्याकन करने में आप सही और सफल नहीं होगों ।धृष्ट वाक्य और व्यवहार गलतफहमी को उत्पन्न करेगा । इसके फलस्वरुप आपको नष्ट कष्ट और अनावश्यक दुःख भोग्ना पडेगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि सूर्य प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें सूर्य को शान्त कराने के लिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर सुर्य दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

केशर रंग रे वस्त्रों को पहनने पर सूर्य को शांन्त कर सकते है । आप लाल रंग के वस्त्र को भी पहन सकते है । सोमवार को और सूर्य की पूजा करता समय इस प्रकार का वस्त्र पहनना शुभ है । उपवास के समय केशर रंग के वस्त्र पहनने से आपको अच्छा परिणाम मिलेगा ।

देवता भजन

सूर्य के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए आपको भग्वान शिव का पूजा करना चाहिए । शिवरात्री, तेरहवी चन्द्र सम्बधी शाम (प्रदाषमे), धनु राशि का आर्द्रा नक्षत्र के दिवस पर शिव भग्वान के मंदिरों में दर्शन, अपने जन्म नक्षत्र में शिव भग्वान के मंदिर में दर्शन, अपने योग्यता के अनुसार भग्वान को दान आदि सूर्य के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए उचित मार्ग है ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्यंदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद सूर्य की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय

सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
सुर्य को शान्त करने के लिए ताबाँ या सोने से बना सुर्य की मुर्ति, भूरा रंग का गाय और उसका बच्चा, लाल माणि (माणिक), ताबाँ, सोना, गेहूँ, रक्त चन्दन, केशर वस्त्र आदि को दोन कर सकते है ।

पूजा

सूर्य को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है । आपको लाल फूलों से सूर्य का पूजा करना चाहिए । मेष मास के रविवार में जब सूर्य नोक आनन्दातिरेक (मेष मास के दसवी दिन) और नक्षत्र के दिन में भी आप सूर्य की पूजा कर सकते है । निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए ।

नव गृहों के मंदिर में दर्शन करना और सूर्य के मूर्ति को लाल फूलों के पँखडी से पूजा करना लाभदायक है । आपको उपदेश दिया गया है कि आप तुला मास में सूर्य की पूजा नहीं करें ।

मन्त्रों का आलापन

जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा सूर्य का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ऊँ प्रभाकराय विद्महे
दिवाकराय धीमहि
तनाः सुर्य : प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्वि प्राप्त होगा।

अंगुलिक यंन्त्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है ।सुर्य को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

६	१	८
७	५	३
२	९	४

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 16-7-2018 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :चन्द्र

आपका चन्द्र दाश 16-7-2018 को शुरु होता है ।

प्ड्ढ्ढ्म्ण चन्द्र भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

आपके जन्मकण्डली में उपस्थित गृहों के स्थान के आधार पर चन्द्र दाश में आपको प्रतिकूल प्रभावों का अनुभव करना पडेगों । इस समय आपको कई अप्रत्यशित मुसीबतों को सामना करना पड़ेगा । परिश्रम युक्त मानसिक और शरीरिक प्रयासों से आपको दूर रहना चाहिए । श्रेष्ठ व्यक्तिगतों से लेन देन पर ध्यान रखना चाहिए ।

चन्द्र दाश के हानिकारक प्रभाव की तीव्रता चन्द्र के स्थानपरिवर्तन पर बदलता रहता है । जब चन्द्र प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबते आपको सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

जब चन्द्र कमजोर है आपको अप्रत्यशित नष्टों और धन सम्बधित मुसीबतों का सामना करना पडेगा । आपको विनिद्रता को भेगना पडेगा । आपका अनावश्यक परेशानी हर साहचर्यों पर मुसबितों को उत्पन्न करेगा ।

आपके चिन्ता और चेतना में प्रत्थक्ष परिवर्तन होगा । प्रतिकूल स्थितियों में आप अपने अभिप्रायों से विचलित होगों । गरम वातवरण में जीना आपके लिए मुशीकल पडेगा ।

इस समय पारिवारिक सम्बधों को बनाए रखना आपके लिए मुशीकल पड़ जाएगा । बालिश बाते भी आपको व्याकुल करेगा । अपने वाक्यों को नियंत्रित करना आपके लिए मुशीकल पड़ेगा ।

जब चन्द्र प्रतिकूल स्थान पर है आपको बीमारी का सामना करना पडेगा । अपच (अजीर्ण), साँस लेने में मुशकिल, थकावट, और अत्थधिक व्यास आदि लक्षण देखे तो सावधान रहना चाहिए ।

चन्द्र दाश में अगर इस प्रकार के प्रश्नो की वृति हो तो यह जानना चाहिए कि चन्द्र प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है ।

जो लोग इस प्रकार के व्यकुलता को अधिक मेहसूस कर रहा है तो चन्द्र को शान्त कराने के लिए कुछ मार्ग अपनाना पडेगा । चन्द्र को शान्त रखने पर आपके हानिकारक प्रभावों को दुर्बल कर सकते है ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तुत निरीक्षण के आधार पर जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना है उसके बारे में नीचे प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

चादनी के जैसे उज्वल रंग चन्द के लिए प्रिय है । इसलिए सफेद और चन्दन रंग के वस्त्र पहनने पर चन्द्र को शान्त कर सकते है । इस प्रकार का वस्त्र सोमवार को पूर्ण चन्द्र दिवस पर और नक्षत्र देव और चन्द्र की पूजा करते समय पहनना शुभ है ।

जीवन रीति

चन्द्र दाश में आपका जीवन रीति चन्द्र की आवश्यकता को परिपुर्ण करना चाहिए । ध्यान और प्रार्थना जैसे शान्त कार्यों में शमिल होने से चन्द्र दाश के हानिकारक प्रभावों को कम कर सकते है । दूसरो की सहायता करने केलिए और शक्ति होने लोगें की रक्षा करने के लिए आपको कुछ समय बिताना चाहिए । अपने विश्वास और कर्म क्षेत्र में सिथर होना चाहिए । अपने प्रिय देव से प्रर्थना करना लाभदायक है । अपने प्यारे सम्बंधों को उचित महत्व देने के लिए भूलना नहीं चाहिए । चन्द्र दाश में मदोन्मत करने वाले वस्तु और इसका उपयोग करने वालें लोगे से दूर रहना चाहिए । जलयात्रा, तैरना और शराब पीने पर आपको संयम रखना चाहिए । आपको यह जानना चाहिए कि आप जो पानी पी रहे है वह शुद्व हो । पानी और अन्य जल सम्बधी चीजों के लेन देन पर सावधान रहना चाहिए ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन और शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्योदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद चन्द्र की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
पापनाशन लोकेश देवदेव नमोस्तुते
शशंकनिष्टसंभुतं दोषजातम् विनाश्य

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शय्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । चाँद को शान्त कराने के लिए आपको सोमवार के दिन में उपवास लेना चाहिए । चन्द्र के हानिकारक प्रभावों को कम करने लिए आपको अपने जन्म नक्षत्र के दिन में अवास रखना चाहिए । उपवास के समय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 15-7-2028 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :मंगल

आपका मंगल दाश 15-7-2028 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र मघा है । प्ड्ढद्धण मंगल भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

जन्मकुण्डली में इस गृह स्थान के आधार पर मंगल दाश में आपको प्रतिकूल स्थितियों से गुजरना पडेगा । इस समय सफलता पाने के लिए आपको अप्रत्याशित मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा । छोटे काम के लिए भी आपको दूसरों पर निर्भर होना पडेगा । अपने उत्साह और ओज को बनाए रखने के लिए प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

मंगल दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब मंगल कमोज है आपके काम के कुछ बदलाव होगा । इसलिए आपके विशिष्ट योग्यताओं को बनाए रखने केलिए प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

इस समय जानबुझकर या आनजाने में अपवाद में शामिल हो जाएगो । आपको अपने जीवन रीति पर संयम रखना चाहिए । दूसरे लिंग के लोगें से मिलते जुलते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

इस समय दोस्तों को सभालते वक्त आपको उसके खिलाफ नहीं होना चाहिए । प्रतिकूल परिस्थिति में अपने क्रोध को नियंत्रित करना

आपके लिए मुशकिल पड जाएगा । दूसरों के मामले में दखल देना के अभिरुचि आपको होगा । इसी कारण आप अनावश्यक मुसीबतों में पड़ जाएगा ।.

मंगल को कलह का उत्तरदायित्व माना जाता है । इसलिए जब मंगल प्रतिकूल स्थान पर है तो छोटे - छोटे वाद विवाद और बहस बडा तर्कविषय बन सकता है । इसलिए प्रतिकूल परिस्थियों से दूर रहे ओर अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण रखे । किसी बातचीत में शमिल होते समय अपने विरोधियों से आदर का भाव रखना चाहिए ।

इस समय अनेक रोगों का सामना करना पडेगा । वातावरण में होने वाले परिवर्तन आपके स्वास्थय पर प्रभावित होगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि मंगल दाश प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें मंगल को शान्त कराने के लिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर मंगल दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

मंगल एक लाल गृह है । लाल रंग मंगल गृह का प्रिय रंग है । मंगल गृह को शान्त करोन के लिए आपको मंगलवार में लाल रंग का वस्त्र पहनना चाहिए । इसी प्रकार का रंग,रेशमी कपड़ा पहनना लाभदायक है ।

देवता भजन

जिन लोगे के जन्मकुण्डली में मंगल गृह ओज राशी में है उनको सुभ्रमण्य देव की पूजा करना चाहिए और जिनका युगम्म राशी में है उनको भद्रकालि देवी की पूजा करना चाहिए ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्यंदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद मंगल की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु(इस प्रार्थना का आलपन करे) इसके बाद
देव देव जगन्नाथ देवता नामपीश्वर
भूपुत्रानिष्टसंभुतम् दोषजातम् विनाशये

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है पने मन और शरीर को शुद्व करना ।अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए ।

मंगलगृह को शान्त करने के लिए आपको मंगलवार में वृत्त रखना चाहिए । इस समय सुभ्रमणन्य क्षेत्र में था कोई देवी की दर्शन करना चाहिए । अपने योग्यता के अनुसार दान देना चाहिए । मकर राशि के समय लाल रंग के फूले से अगांरका पूजा करना उचित है । उपवास लेते समय शाम के बाद नमकीन खाध्य पदार्थ को टालना चाहिए । उपवास केसमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
मंगल गृह को शान्त करने के लिए लाल रंग का पुरुप जानवर, लाल वस्त्र, सोना, ताँबा या ताबाँ से बनी मुर्ति दान देना लाभदायक है ।

पूजा

मंगल को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है ।-आपको शिववन्ती, जपाकुसुम आदि फूलों से मंगल गृह का पूजा करना चाहिए । मंगल पूजा एक विशिष्टपूजा है जो अच्छे परिणामें को उत्पन्न करता है । नव गृहों के मंदिर में दर्शन करना,चम्पा फूल से मंगल गृह की पूजा करना और चम्पा फूल की माला से मंगल गृह को आभूषित करना लाभदायक है ।निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए । इस पूजा को तब करना अत्थधिक उचित है जब मंगल मकर राशी में हो ।

मन्त्रों का आलापन

जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा मंगल का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ऊँ भुमिपुत्राय विद्महे
लोहितांगाय धीमहि
तन : भौम : प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्वि प्राप्त होगा ।

मंगल को प्रसन्न करने के लिए मंगल के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए । मन्त्र इस प्रकार है

ऊँ महीसुताय नम :
ऊँ महाभागाय नम :
ऊँ मंगलाय नम :
ऊँ मंगलप्रदाय नम :
ऊँ महावीराय नम :
ऊँ महाशूराय नम :
ऊँ महाबलपराक्रमाय नम :
ऊँ महारौद्राय
ऊँ महाभद्राय नम :
ऊँ माननीयाय नम :
ऊँ दयाकराय नम :
ऊँ मानदाय नम :

अंगुलिक यंन्त्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । मंगल को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 16-7-2035 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :गुरु

आपका गुरु दाश 16-7-2053 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र मघा है । दाश के अधिपति का हानिकारक संयोग है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

जन्मकुण्डली के इस गृह स्थान के आधार पर गुरु दाश में प्रतिकूल स्थितियो से गुजरना पडेगा । गुरु समृद्वि को प्रधान करनेवाला गृह है फिर भी जब यह प्रतिकूल स्थिति में है तो आपको अप्रत्याशित मुसीबतों का सामना करना पडेगा । स्वास्थय विषय में आपके हमेशा आत्म संतुष्ट नहीं रहना चाहिए । अप्रधान व्याधि पर भी चिकित्स लेना चाहिए ।

गुरु दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब गुरु कमज़ोर है आपका ईश्वर विश्वास भी कम हो जाएग । दूसरों का काम जानबुझकर या अनजाने में आपको दुख पहुँचाएगा । इस समय आपको अपने क्रोध और संतोष पर नियंत्रण रखना चाहिए ।

इस समय आप आशावादी बनना मुशीकल समझेगो । निराशा, चिन्ता और आत्मविश्वास की कमी सफलता के मार्ग में रुकावट बन जाएगा । दोस्तों और रिशतेदारों से बातचीत करते समय आपको स्वंय नियंत्रण करना चाहिए ।

इस समय आपको जीवन शक्ति की कमी मेहसूस होगा । आपका अतिव्यय वित्तसम्धी मूसिबतों को उत्पन्न करेगा । आपको कोमल व्यवहार को बनाए रखना चाहिए ।

जब गुरु प्रतिकूल स्थान पर है तो आपको अपने बोझ मे कमी होगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि गुरु प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें गुरु को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है । और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर गुरु दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

गुरु गृह को शान्त कराने के लिए आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए । हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको गुरुवार में पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए ।

देवता भजन

गुरु गृह को शान्त करने के लिए आपको महाविष्णु भगवान का पूजा करना चाहिए । गुरुवार को वृत लेकर विष्णु भगवान के मंदिर में दर्शन,जन्म नक्षत्र में विष्णु पूजा, गुरु दाश में शत्रओं के वृति पर महासुदर्शन होम का पालन करना, और चक्रब्जी पूजा करना आदि गुरु को शांत कराने का मार्ग है ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । गुरु को शान्त करने के लिए आपको गुरुवार में उपवास रखना चाहिए । इस समय विष्णु भगवान के मंदिर में दर्शन करना चाहिए और अपने योगयता के अनुसार दान करना चाहिए ।

उपवास केसमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः यापूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
गुरु को शान्त करने के लिए दाल, पीला माणिक्य, हलदी, जूट, नींबू, सोंना, नमक, शक्कर आदि को दान देना लाभदायक है ।

पूजा

गुरु को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है ।आपको चमेली फूल और पीले फूलों से गुरु का पूजा करना चाहिए । नव गृहों के क्षेत्र में दर्शन करना, गुरुवार को चमेली से गुरु का पूजा करना और चमेली की माला से अभूषित करना लाभदायक है । यब पूजा जन्म नक्षत्र के दिन में भी कर सकते है ।निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए ।

मन्त्रों का आलापन

जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा गुरु का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ऊँ अंगिरोजाताय विद्महे
वाचस्पतये धीमहि
तनो गुरुः प्रचोदयात्

ऊँ बार्हस्पताय विदमेह
देवाचार्याय धीमहि
तनो बृहस्पतिः प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्वि प्राप्त होगा ।

गुरु को प्रसन्न करने के लिए गुरु के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए । मन्त्र इस प्रकार है

ॐ श्रीगुरवे नम :
ॐ गुणकराय नम :
ॐ गोप्त्रे नम :
ॐ गोचराय नम :
ॐ गोपतीप्रियाय नम :
ॐ गुणिने नम :
ॐ गुणवतांश्रेष्टाय नम :
ॐ गुरुणाम् गुरुवे नम :
ॐ अंगीरसाय नम :
ॐ जेत्रे नम :
ॐ जयन्ताय नम :
ॐ जयदाय नम :

अंगुलिक यंन्त्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । गुरु को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 16-7-2069 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा और भुक्ती का विवरण काल

(साल = 365.25 दिन)

जन्म के समय दशा की समतुलना = केतु 5 साल, 5 महीने, 0 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
केतू	सूर्य	14-02-1987	19-06-1987
केतू	चन्द्र	19-06-1987	18-01-1988
केतू	कुज	18-01-1988	15-06-1988
केतू	राहू	15-06-1988	03-07-1989
केतू	गुरु	03-07-1989	09-06-1990
केतू	शनि	09-06-1990	19-07-1991
केतू	बुध	19-07-1991	15-07-1992
शुक्र	शुक्र	15-07-1992	15-11-1995
शुक्र	सूर्य	15-11-1995	14-11-1996
शुक्र	चन्द्र	14-11-1996	16-07-1998
शुक्र	कुज	16-07-1998	15-09-1999
शुक्र	राहू	15-09-1999	15-09-2002
शुक्र	गुरु	15-09-2002	16-05-2005
शुक्र	शनि	16-05-2005	15-07-2008
शुक्र	बुध	15-07-2008	16-05-2011
शुक्र	केतू	16-05-2011	15-07-2012
सूर्य	सूर्य	15-07-2012	02-11-2012
सूर्य	चन्द्र	02-11-2012	03-05-2013
सूर्य	कुज	03-05-2013	08-09-2013
सूर्य	राहू	08-09-2013	03-08-2014
सूर्य	गुरु	03-08-2014	22-05-2015
सूर्य	शनि	22-05-2015	03-05-2016
सूर्य	बुध	03-05-2016	10-03-2017
सूर्य	केतू	10-03-2017	16-07-2017
सूर्य	शुक्र	16-07-2017	16-07-2018
चन्द्र	चन्द्र	16-07-2018	16-05-2019
चन्द्र	कुज	16-05-2019	15-12-2019
चन्द्र	राहू	15-12-2019	15-06-2021
चन्द्र	गुरु	15-06-2021	15-10-2022
चन्द्र	शनि	15-10-2022	15-05-2024
चन्द्र	बुध	15-05-2024	15-10-2025
चन्द्र	केतू	15-10-2025	16-05-2026
चन्द्र	शुक्र	16-05-2026	15-01-2028
चन्द्र	सूर्य	15-01-2028	15-07-2028
कुज	कुज	15-07-2028	11-12-2028
कुज	राहू	11-12-2028	30-12-2029
कुज	गुरु	30-12-2029	06-12-2030
कुज	शनि	06-12-2030	15-01-2032

कुज	बुध	15-01-2032	11-01-2033
कुज	केतू	11-01-2033	09-06-2033
कुज	शुक्र	09-06-2033	09-08-2034
कुज	सूर्य	09-08-2034	15-12-2034
कुज	चन्द्र	15-12-2034	16-07-2035
राहू	राहू	16-07-2035	28-03-2038
राहू	गुरु	28-03-2038	21-08-2040
राहू	शनि	21-08-2040	28-06-2043
राहू	बुध	28-06-2043	14-01-2046
राहू	केतू	14-01-2046	02-02-2047
राहू	शुक्र	02-02-2047	01-02-2050
राहू	सूर्य	01-02-2050	27-12-2050
राहू	चन्द्र	27-12-2050	27-06-2052
राहू	कुज	27-06-2052	16-07-2053
गुरु	गुरु	16-07-2053	03-09-2055
गुरु	शनि	03-09-2055	16-03-2058
गुरु	बुध	16-03-2058	21-06-2060
गुरु	केतू	21-06-2060	28-05-2061
गुरु	शुक्र	28-05-2061	27-01-2064
गुरु	सूर्य	27-01-2064	14-11-2064
गुरु	चन्द्र	14-11-2064	16-03-2066
गुरु	कुज	16-03-2066	20-02-2067
गुरु	राहू	20-02-2067	16-07-2069
शनि	शनि	16-07-2069	18-07-2072
शनि	बुध	18-07-2072	28-03-2075
शनि	केतू	28-03-2075	06-05-2076
शनि	शुक्र	06-05-2076	07-07-2079
शनि	सूर्य	07-07-2079	18-06-2080
शनि	चन्द्र	18-06-2080	17-01-2082
शनि	कुज	17-01-2082	26-02-2083

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

वर्तमान वर्ष से २५ साल तक पर्यन्तर दशा काल

दशा : रवि अपहार : राहु

1.र	08-09-2013	>>	28-10-2013	**2.गु**	28-10-2013	>>	10-12-2013
3.श	10-12-2013	>>	01-02-2014	**4.बु**	01-02-2014	>>	19-03-2014
5.के	19-03-2014	>>	07-04-2014	**6.शु**	07-04-2014	>>	01-06-2014
7.र	01-06-2014	>>	17-06-2014	**8.चं**	17-06-2014	>>	15-07-2014
9.मं	15-07-2014	>>	03-08-2014				

दशा : रवि अपहार : गुरु

1.गु	03-08-2014	>> 11-09-2014	**2.श**	11-09-2014	>> 27-10-2014
3.बु	27-10-2014	>> 08-12-2014	**4.के**	08-12-2014	>> 25-12-2014
5.शु	25-12-2014	>> 11-02-2015	**6.र**	11-02-2015	>> 26-02-2015
7.चं	26-02-2015	>> 22-03-2015	**8.मं**	22-03-2015	>> 08-04-2015
9.रा	08-04-2015	>> 22-05-2015			

दशा : रवि अपहार : शनि

1.श	22-05-2015	>> 16-07-2015	**2.बु**	16-07-2015	>> 03-09-2015
3.के	03-09-2015	>> 24-09-2015	**4.शु**	24-09-2015	>> 20-11-2015
5.र	20-11-2015	>> 08-12-2015	**6.चं**	08-12-2015	>> 06-01-2016
7.मं	06-01-2016	>> 26-01-2016	**8.रा**	26-01-2016	>> 18-03-2016
9.गु	18-03-2016	>> 03-05-2016			

दशा : रवि अपहार : बुध

1.बु	03-05-2016	>> 16-06-2016	**2.के**	16-06-2016	>> 04-07-2016
3.शु	04-07-2016	>> 25-08-2016	**4.र**	25-08-2016	>> 10-09-2016
5.चं	10-09-2016	>> 05-10-2016	**6.मं**	05-10-2016	>> 24-10-2016
7.रा	24-10-2016	>> 09-12-2016	**8.गु**	09-12-2016	>> 20-01-2017
9.श	20-01-2017	>> 10-03-2017			

दशा : रवि अपहार : केतु

1.के	10-03-2017	>> 17-03-2017	**2.शु**	17-03-2017	>> 07-04-2017
3.र	07-04-2017	>> 14-04-2017	**4.चं**	14-04-2017	>> 25-04-2017
5.मं	25-04-2017	>> 02-05-2017	**6.रा**	02-05-2017	>> 21-05-2017
7.गु	21-05-2017	>> 07-06-2017	**8.श**	07-06-2017	>> 27-06-2017
9.बु	27-06-2017	>> 16-07-2017			

दशा : रवि अपहार : शुक्र

1.शु	16-07-2017	>> 14-09-2017	**2.र**	14-09-2017	>> 03-10-2017
3.चं	03-10-2017	>> 02-11-2017	**4.मं**	02-11-2017	>> 23-11-2017
5.रा	23-11-2017	>> 17-01-2018	**6.गु**	17-01-2018	>> 07-03-2018
7.श	07-03-2018	>> 04-05-2018	**8.बु**	04-05-2018	>> 24-06-2018
9.के	24-06-2018	>> 16-07-2018			

दशा : चन्द्र अपहार : चन्द्र

1.चं	16-07-2018	>> 10-08-2018	**2.मं**	10-08-2018	>> 28-08-2018
3.रा	28-08-2018	>> 13-10-2018	**4.गु**	13-10-2018	>> 22-11-2018
5.श	22-11-2018	>> 09-01-2019	**6.बु**	09-01-2019	>> 21-02-2019
7.के	21-02-2019	>> 11-03-2019	**8.शु**	11-03-2019	>> 01-05-2019
9.र	01-05-2019	>> 16-05-2019			

दशा : चन्द्र अपहार : मंगल

1.मं	16-05-2019	>> 29-05-2019	**2.रा**	29-05-2019	>> 30-06-2019
3.गु	30-06-2019	>> 28-07-2019	**4.श**	28-07-2019	>> 31-08-2019
5.बु	31-08-2019	>> 30-09-2019	**6.के**	30-09-2019	>> 12-10-2019
7.शु	12-10-2019	>> 17-11-2019	**8.र**	17-11-2019	>> 27-11-2019
9.चं	27-11-2019	>> 15-12-2019			

दशा : चन्द्र अपहार : राहु

1.रा	15-12-2019	>> 06-03-2020	**2.गु**	06-03-2020	>> 18-05-2020
3.श	18-05-2020	>> 13-08-2020	**4.बु**	13-08-2020	>> 30-10-2020
5.के	30-10-2020	>> 01-12-2020	**6.शु**	01-12-2020	>> 02-03-2021
7.र	02-03-2021	>> 29-03-2021	**8.चं**	29-03-2021	>> 14-05-2021
9.मं	14-05-2021	>> 15-06-2021			

दशा : चन्द्र अपहार : गुरु

1.गु	15-06-2021	>> 19-08-2021	**2.श**	19-08-2021	>> 04-11-2021
3.बु	04-11-2021	>> 12-01-2022	**4.के**	12-01-2022	>> 10-02-2022
5.शु	10-02-2022	>> 02-05-2022	**6.र**	02-05-2022	>> 26-05-2022
7.चं	26-05-2022	>> 06-07-2022	**8.मं**	06-07-2022	>> 03-08-2022
9.रा	03-08-2022	>> 15-10-2022			

दशा : चन्द्र अपहार : शनि

1.श	15-10-2022	>> 15-01-2023	**2.बु**	15-01-2023	>> 07-04-2023
3.के	07-04-2023	>> 10-05-2023	**4.शु**	10-05-2023	>> 15-08-2023
5.र	15-08-2023	>> 13-09-2023	**6.चं**	13-09-2023	>> 31-10-2023
7.मं	31-10-2023	>> 04-12-2023	**8.रा**	04-12-2023	>> 28-02-2024
9.गु	28-02-2024	>> 15-05-2024			

दशा : चन्द्र अपहार : बुध

1.बु	15-05-2024	>> 28-07-2024	**2.के**	28-07-2024	>> 27-08-2024
3.शु	27-08-2024	>> 21-11-2024	**4.र**	21-11-2024	>> 17-12-2024
5.चं	17-12-2024	>> 29-01-2025	**6.मं**	29-01-2025	>> 28-02-2025
7.रा	28-02-2025	>> 17-05-2025	**8.गु**	17-05-2025	>> 25-07-2025
9.श	25-07-2025	>> 15-10-2025			

दशा : चन्द्र अपहार : केतु

1.के	15-10-2025	>> 27-10-2025	**2.शु**	27-10-2025	>> 02-12-2025
3.र	02-12-2025	>> 12-12-2025	**4.चं**	12-12-2025	>> 30-12-2025
5.मं	30-12-2025	>> 12-01-2026	**6.रा**	12-01-2026	>> 13-02-2026
7.गु	13-02-2026	>> 13-03-2026	**8.श**	13-03-2026	>> 16-04-2026
9.बु	16-04-2026	>> 16-05-2026			

दशा : चन्द्र अपहार : शुक्र

1.शु	16-05-2026	>>	25-08-2026	**2.र**	25-08-2026	>>	25-09-2026
3.चं	25-09-2026	>>	15-11-2026	**4.मं**	15-11-2026	>>	20-12-2026
5.रा	20-12-2026	>>	21-03-2027	**6.गु**	21-03-2027	>>	11-06-2027
7.श	11-06-2027	>>	15-09-2027	**8.बु**	15-09-2027	>>	10-12-2027
9.के	10-12-2027	>>	15-01-2028				

दशा : चन्द्र अपहार : रवि

1.र	15-01-2028	>>	24-01-2028	**2.चं**	24-01-2028	>>	08-02-2028
3.मं	08-02-2028	>>	19-02-2028	**4.रा**	19-02-2028	>>	17-03-2028
5.गु	17-03-2028	>>	10-04-2028	**6.श**	10-04-2028	>>	09-05-2028
7.बु	09-05-2028	>>	04-06-2028	**8.के**	04-06-2028	>>	15-06-2028
9.शु	15-06-2028	>>	15-07-2028				

दशा : मंगल अपहार : मंगल

1.मं	15-07-2028	>>	24-07-2028	**2.रा**	24-07-2028	>>	15-08-2028
3.गु	15-08-2028	>>	04-09-2028	**4.श**	04-09-2028	>>	28-09-2028
5.बु	28-09-2028	>>	19-10-2028	**6.के**	19-10-2028	>>	28-10-2028
7.शु	28-10-2028	>>	22-11-2028	**8.र**	22-11-2028	>>	29-11-2028
9.चं	29-11-2028	>>	11-12-2028				

दशा : मंगल अपहार : राहु

1.रा	11-12-2028	>>	07-02-2029	**2.गु**	07-02-2029	>>	30-03-2029
3.श	30-03-2029	>>	30-05-2029	**4.बु**	30-05-2029	>>	23-07-2029
5.के	23-07-2029	>>	15-08-2029	**6.शु**	15-08-2029	>>	17-10-2029
7.र	17-10-2029	>>	06-11-2029	**8.चं**	06-11-2029	>>	08-12-2029
9.मं	08-12-2029	>>	30-12-2029				

दशा : मंगल अपहार : गुरु

1.गु	30-12-2029	>>	13-02-2030	**2.श**	13-02-2030	>>	08-04-2030
3.बु	08-04-2030	>>	27-05-2030	**4.के**	27-05-2030	>>	16-06-2030
5.शु	16-06-2030	>>	11-08-2030	**6.र**	11-08-2030	>>	28-08-2030
7.चं	28-08-2030	>>	26-09-2030	**8.मं**	26-09-2030	>>	16-10-2030
9.रा	16-10-2030	>>	06-12-2030				

दशा : मंगल अपहार : शनि

1.श	06-12-2030	>>	08-02-2031	**2.बु**	08-02-2031	>>	06-04-2031
3.के	06-04-2031	>>	30-04-2031	**4.शु**	30-04-2031	>>	06-07-2031
5.र	06-07-2031	>>	27-07-2031	**6.चं**	27-07-2031	>>	29-08-2031
7.मं	29-08-2031	>>	22-09-2031	**8.रा**	22-09-2031	>>	22-11-2031
9.गु	22-11-2031	>>	15-01-2032				

दशा : मंगल अपहार : बुध

1.बु	15-01-2032	>> 06-03-2032	**2.के**	06-03-2032	>> 27-03-2032
3.शु	27-03-2032	>> 26-05-2032	**4.र**	26-05-2032	>> 14-06-2032
5.चं	14-06-2032	>> 14-07-2032	**6.मं**	14-07-2032	>> 04-08-2032
7.रा	04-08-2032	>> 27-09-2032	**8.गु**	27-09-2032	>> 15-11-2032
9.श	15-11-2032	>> 11-01-2033			

दशा : मंगल अपहार : केतु

1.के	11-01-2033	>> 20-01-2033	**2.शु**	20-01-2033	>> 13-02-2033
3.र	13-02-2033	>> 21-02-2033	**4.चं**	21-02-2033	>> 05-03-2033
5.मं	05-03-2033	>> 14-03-2033	**6.रा**	14-03-2033	>> 05-04-2033
7.गु	05-04-2033	>> 25-04-2033	**8.श**	25-04-2033	>> 19-05-2033
9.बु	19-05-2033	>> 09-06-2033			

दशा : मंगल अपहार : शुक्र

1.शु	09-06-2033	>> 19-08-2033	**2.र**	19-08-2033	>> 09-09-2033
3.चं	09-09-2033	>> 15-10-2033	**4.मं**	15-10-2033	>> 09-11-2033
5.रा	09-11-2033	>> 12-01-2034	**6.गु**	12-01-2034	>> 09-03-2034
7.श	09-03-2034	>> 16-05-2034	**8.बु**	16-05-2034	>> 15-07-2034
9.के	15-07-2034	>> 09-08-2034			

दशा : मंगल अपहार : रवि

1.र	09-08-2034	>> 16-08-2034	**2.चं**	16-08-2034	>> 26-08-2034
3.मं	26-08-2034	>> 03-09-2034	**4.रा**	03-09-2034	>> 22-09-2034
5.गु	22-09-2034	>> 09-10-2034	**6.श**	09-10-2034	>> 29-10-2034
7.बु	29-10-2034	>> 16-11-2034	**8.के**	16-11-2034	>> 24-11-2034
9.शु	24-11-2034	>> 15-12-2034			

दशा : मंगल अपहार : चन्द्र

1.चं	15-12-2034	>> 02-01-2035	**2.मं**	02-01-2035	>> 14-01-2035
3.रा	14-01-2035	>> 15-02-2035	**4.गु**	15-02-2035	>> 16-03-2035
5.श	16-03-2035	>> 18-04-2035	**6.बु**	18-04-2035	>> 18-05-2035
7.के	18-05-2035	>> 31-05-2035	**8.शु**	31-05-2035	>> 05-07-2035
9.र	05-07-2035	>> 16-07-2035			

दशा : राहु अपहार : राहु

1.रा	16-07-2035	>> 11-12-2035	**2.गु**	11-12-2035	>> 20-04-2036
3.श	20-04-2036	>> 24-09-2036	**4.बु**	24-09-2036	>> 10-02-2037
5.के	10-02-2037	>> 09-04-2037	**6.शु**	09-04-2037	>> 20-09-2037
7.र	20-09-2037	>> 09-11-2037	**8.चं**	09-11-2037	>> 30-01-2038
9.मं	30-01-2038	>> 28-03-2038			

दशा : राहु अपहार : गुरु

1.गु	28-03-2038 >>	23-07-2038		**2.श**	23-07-2038 >>	09-12-2038
3.बु	09-12-2038 >>	12-04-2039		**4.के**	12-04-2039 >>	02-06-2039
5.शु	02-06-2039 >>	26-10-2039		**6.र**	26-10-2039 >>	09-12-2039
7.चं	09-12-2039 >>	20-02-2040		**8.मं**	20-02-2040 >>	11-04-2040
9.रा	11-04-2040 >>	21-08-2040				

खास प्रकार का ग्रहों के बीच रहा संयोग

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। लेकिन विशेष, दूसरे योग जो हैं वह गृहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते है तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

रुचकयोग

लक्षणः
जन्मकुंडली में मंगल, स्वगृह में केन्द्रीय स्थान पर

रुचक योग के कारण आप स्वस्थशरीर के सुन्दररूप बलिष्ट और आकर्षक प्रकृति के पुरुष होंगे। आप एक सच्चे, अच्छे चरित्रवान पुरुष होंगे। इसलिए पुलिस, सेना या किसी अन्य अनुशासित संस्थान के साथ आपका संबन्ध बना रहेगा। अपने जीवन में जिस किसी भी स्थान पर रहेंगे वहाँ अनुशासन को ज़्यादा महत्व दिया जायेगा। आप स्वभाव से दानशील है।आपका आयु लगभग ७० साल की होगा। आपका आर्थिक स्थिति श्रेष्ठ रहेगा। हृदय से आप करुणामय होंगे। प्राचीन शास्त्रों के प्रति और पौराणिक संस्कारों के प्रति अभिरुचि रखनेवाले हैं। जीवन में कीर्ति प्रदान होगी।

राज योग

लक्षणः

जन्मकुण्डली में राजयोग दिखाई पडता है ।

आप शक्ति और अधिकार पद तक पहुँच जाएगों ।

मात्रुमूलधन योग

लक्षणः
दूसरे स्थान का स्वामी चतुर्थस्थान के स्वामीत्व के सहयोग में रहा है।

आपको मातृकृपा के कारण धन संपन्न होगा।

द्विगृह योग

लक्षणः
दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
रवि,बुध , दूसरा भाव में है ।

आप ज्यादा से ज्यादा ज्ञान प्राप्त कर सकते है । आपका बुद्वि वैभव और पाणिडत्य शक्ति दूसरों को आश्चर्य करेगा । लेकिन आप अपने राय पर स्थिर नहीं रहेगों । दूसरों को लाभ पहुँचाने वाले परियोजन से आप धन कमा सकते है । आपका अद्‌भुत वाक्य शक्ति अनेक अभिनन्द को अपनाएगा ।

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण द्रष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यों पर अपना प्रभाव डालने वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में चौथा स्थानपर रहा है।

यह स्थिती दोषग्रस्त है और कुछ हद तक अमंगलकारी बनी रही है।
जन्मकुंडली में मेष वे स्थान पर मंगलदोष क्षीण हो जाता है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

यह जन्मकुंडली मंगल दोष से मुक्त है।

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढ्य स्थिती प्राप्त करता है। मौढ्य दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है।

इस जन्मकुंडली में कोई भी गृह मौढ्य स्थिती में नही है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है।
अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ठतम स्थिती।/ क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					बालावस्था
र					बालावस्था
बु					वृदावस्था
शु					युवावस्था
मं					बालावस्था
गु					मित्रवस्था
श					बालावस्था

अष्टकवर्ग

अष्टकवर्गा पध्दति भारतीय ज्योतिष का भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से सम्बधित अंको के प्रयोग का उपयोग करता है । अष्टकवर्गा का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण । यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों को अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है । गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गय है । एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे सम्बधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है । हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिया जाता है । गृहों का ०-८ अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा ।

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	4	3	4	4	3*	7	2	27
वृषभ	3	5	3	1	3	6	2	23
मिथुन	6	5	5	4	5	4	3	32
कर्क	1	4	5	5	5	3	2	25
सिंह	5*	3	4	5	2	2	3	24
कन्या	6	2	2	6	1	5	4	26
तुला	4	5	6	4	4	7	4	34
वृशचिक	3	7	5	3	5	4	4*	31
धनु	4	5	5	6*	3	4	2	29
मकर	4	4	7	5	4	5	6	35
कुंम्भ	5	3*	6*	4	3	5	3	29
मीन	4	2	2	5	1	4*	4	22
	49	48	54	52	39	56	39	337

* - गृहों का स्थान.
लग्न मकर में है ।

चन्द्र का अष्टकवर्गा

ऐसे कुछ ही लोग अनुग्रहित होगें जो नैतिकतत्व सत्य को धैर्य से प्रकाशित करें । जन्मकुण्डली के चन्द्र अष्टकवर्गा में उपस्थित पाँच बिन्धु आपको नैतिकतत्व को ऊँचा करने का धैर्य प्रधान करेगा । यह आपको व्यक्त अन्तरात्मा प्रधान करेगा और आप अपने आप शान्त होगें ।

सूर्य का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के सूर्य अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिन्धुओं का प्रभाव को टाल नहीं सकते । निरंतर यात्रा और शरीरिक प्रयासों से प्रभावित होकर आपका शरीर तक जाएगा । फिर भी आपका मानसिक नियंत्रण आपके हाथो में होगा । संघर्षों से मानसिक खिंचाव को दूर रखने के लिए ध्यान रखे । जीवन के कष्ट समय पर पेढ़ लिखे लोगें का उपदेश लेना उचित होगा ।

बुध गृह का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के बुध अष्टकवर्गा में छः बिन्धु है । यह आपको हर क्षेत्र में सफलता प्रधान करता है । औधोगिक विषय और

परियोजनओं में कोई रुकावट और मुसीबत नहीं होगा ।

शुक्र का अष्टकवर्गा

आपमें ऐसा कुछ है जो विविध प्रकार के अद्‌भुत लोगों के संयोग का आकर्षित करता है । वह तत्व आपके जन्मकुण्डली के शुक्र अष्टकवर्गा में उपस्थित छः बिन्धुओं के कारण है । अपने आकर्षण को सही रुप से सभाँलने पर यह आपके लिए उचित और अनुकूल होगा ।

मंगल गृह का अष्टकवर्गा

मंगल के अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिन्धु यह सूचित करता है कि आपको अपने प्रिय लोगें से दूर रहना पडेगा । यह आपके विदेशी उधोग के कारण होगा । आप इस वियोग को पूर्ण रुप से आनन्द नहीं कर साकेगो फिर भी आपको यह सहना पड़ेगा ।

गुरु का अष्टकवर्गा

किसी कारण से आपके जीवन का हर नीचाई एक उचाई से बराबर हो जाएगा । आपके जन्मकुण्डली में उपस्थित गुरु अष्टकवर्ग के चार बिन्धुओं से प्रभावित होगा । यह एक वरदान है क्योंकि जीवन के परिस्थितियों में होने वाला धटाव-बढ़ाव में मानासिक शान्ति को उत्पन्न करेगा ।

शनि गृह का अष्टकवर्गा

शनि के अष्टकवर्ग में चार बिन्धु है । यह दूसरों से खुशी को सूचित करता है । अपने परिवार रिशतेदारो और दोस्तो से आपको खुशी और सहायता प्राप्त होगा ।

सर्वअष्टकवर्गा भविष्यवाणी

आपके जन्मकुण्डली में सबसे अधिक बिन्धु वृशचिक राशी से कुंभ राशी तक है । प्रांरभिक जीवन में जो कुछ हुआ हो उसको ध्यान में रखे बिना बुढ़ापे में आपको अनेक पुरस्कार हासिल होगा गृहों का षडयन्त्र आपको आर्थिक और स्वास्थ्य खिचाव से मोचित करता है और सेवा निवृत्ति के बाद शन्तिपूर्ण जीवन प्रदान करेगा ।

जब दूसरे लोग अपने उधोग और व्यापार को दृढ़ करने के लिए प्रयत्न कर रहे होगो, (छठे और नवमी भाव में पचीस-तीस बिन्धु है ।) आपका गृह आपको सफलता के मार्ग पर ले जाएगा । आपको लगभग २८ उम्र में समृद्वि मिलेगा और आपका जीवन शैली आपके भागी जीवन से भिन्न होगा । इस भलाई को कृतज्ञता की भाव से अनुभव करे और अपने भाग्य का ध्यान रखे ।

गुरु शुक्र,बुध द्वारा धारण किए राशीी में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा । आपका शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगा और आपको ऊँचेपढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा । आपको उधोग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्वि की ओर ले जाएगा । व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा । आपके सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा । यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा ।

आपके लिए यह विशिष्ट समय २२ और २९ उम्र में होगा ।

गोचर फल

नाम **: Sample** (पुरुष)
जन्म राशी **: सिंह**
जन्म नक्षत्र **: मघा**

गृहस्थिती : 16-जूलाई- 2014
अयनांश : चित्रपक्ष

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान की उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्म कुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में न्यूनाधिक करने की क्षमता रखते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्म राशि से अगली तीन राशियों में सूर्य जा फल देगा, उसका दिग्दर्शन नीचे कराया जा रहा है -

∇ (16-जून-2014 >> 16-जूलाई-2014)

इस समय सूर्य अग्यारवाँ भाव का सक्रमण करेगा

स्वयं के पुरुषार्थ के आधार से प्रगति प्राप्त होगी। सफलता और विजय की श्रृंखला आपका साथ देगी। आप के परिचित और संबन्धी व्यापार के माध्यम से संपत्ति प्राप्त करेंगे। जुए और सट्टेबाजी में भाग लेने की मानसिक प्रेरणा उत्पन्न होगी। लाटरी में सफलता मिल सकती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से आरोग में सुधार होगा। सफलता के लिए यह समय चिरस्मरणीय हो सकता है।

∇ (16-जूलाई-2014 >> 15-अगस्त-2014)

इस समय सूर्य बारहवाँ भाव का सक्रमण करेगा

सूर्य अनुकूल नहीं हैं। अपने कार्य क्षेत्र में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। सहकर्मियों से या अपने समीप में रहनेवालों के प्रति सख्त व्यवहार करना पड़ेगा या कटु वचन कहना पड़ेगा। शारीरिक अस्वस्थता दूर करने का प्रयास करना पड़ेगा। व्यर्थ की लंबी यात्रा करनी होगी। लापरवाह रहने से तबियत पर बुरा असर पड़ने की संभावना है। मानसिक ग्लानि से मुक्त होने का प्रयास अनिवार्य बन पड़ता है। व्ययाधिक्य से बचपाना असंभव नहीं हो कठिन अवश्य है।

∇ (15-अगस्त-2014 >> 14-सितंम्बर-2014)

इस समय सूर्य जन्म भाव का संक्रमण करेगा ।

आपने युवावस्था में प्रवेश किया है। मन और शरीर दोनों पूर्णता की ओर तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। विचारधारा, अभिलाषा और मनोभाव में परिवर्तन का अनुभव होगा। अनुकूल संजोगों के अनुसार हानि होना संभव है। निवास स्थान में, पढाई में और प्रवृत्ति में परिवर्तन की संभावना है। प्रवृति और यात्रा, दोनों को आकस्मिक समस्याओं का सामना करना होगा। अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी उस से बचना कठिन हैं। क्रोध पर नियन्त्रण रखना हर दृष्टि से हितकर होगा।

गुरु का गोचर फल।

गुरु हर राशि के बीच एक साल तक रहता है। गुरु के कारण मिलनेवाले फल की प्राप्ति अति प्रधान होती है।

∇ (20-जून-2014 >> 14-जूलाई-2015)

इस समय गुरु बारहवाँ भाव का सक्रमण करेगा

स्नेहीजनों के विरह का अनुभव होगा। यह अति दुःखद घटना होगी। महिलाओं से आपके लिये अनेक समस्याओं का निर्माण होगा। अनेक यात्रा का योग है। विदेश यात्रा की संभावना है। अनुभव और निर्दिष्ट कार्यों में गलती होने की संभावना रखते हैं। अपने निश्चय से विचलित होना पड़ेगा। अनेक पीड़ा जनक कार्य आपको सतायेंगे। वर्तमान संबन्धों में दरार पड़ सकती है। नये संबन्ध स्थापित हो सकते हैं। मांगलिक कार्यों के निमित्त व्यय होने की संभावना है।

∇ (15-जूलाई-2015 >> 11-अगस्त-2016)

इस समय गुरु जन्म भाव का संक्रमण करेगा ।

छोटी छोटी बातों को विकराल स्वरूप देने से व्यर्थ के तर्क कुतर्क उत्पन्न होते हैं। इनसे बचते रहना और भविष्य में आगे चलकर मन में पश्चाताप करना पड़े ऐसे कार्यों से दूर रहना अनिवार्य है। सट्टे बाजारी में लाभ नहीं है। हानि और कष्ट उत्पन्न करनेवाले कार्यों से बचते रहने का प्रयास करना आवश्यक है। उसमें संपूर्ण सफलता न मिले तो दुःखी होने की आवश्यक नही हैं। कुछ हद तक बच सकते हैं। अपने कार्य क्षेत्र में और वर्तमान पद को छोटा सा धक्का लगेगा।

शनि का गोचर फल।

शनि का गोचर फल साधारण स्थिति में शनि से दुःखद अनुभव ही होता है। शनि के योग के कारण अस्वस्थ स्थिति उत्पन्न होती है। मन उद्वेग से भर उठता है। यह सब होते हुए भी कभी कभी अप्रतिक्षित मार्ग से शनि अनेक लाभ भी प्रदान करता है। हर राशि के मध्य शनि दो वर्ष तक स्थान ग्रहण करता है।

∇ (5-अगस्त-2012 >> 2-नवेम्बर-2014)

इस समय शनि तिसरा भाव का सक्रमण करेगा

शनि अनुकूल स्थिति में चल रहा है। परिवार के बीच विवाह या मंगलमय कार्य होने की संभावना है। विकासपूर्ण समाचार मिलते रहेंगे। कार्यक्षेत्र में विजय प्राप्त होता रहेगा। इस कारण कीर्ति प्राप्त होगी। अप्रतिक्षित मार्ग से अनेक सत्कार्य आपके लिए आ पड़ेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। स्वादिष्ट भोजन के इच्छुक बनेंगे। कार्य करने की ऊर्जा सुलभ मार्ग में उपलब्ध होगी। आपकी लक्ष्य प्राप्ति निकट हैं और उसकी अनुभूति आपको ज़रूर होगी। रुके हुए कामों को बना लेने का प्रयत्न होना चाहिए। सफलता को कोई रोक नहीं सकेगा।

∇ (3-नवेम्बर-2014 >> 26-जानुवरी-2017)

इस समय शनि चौथा भाव का सक्रमण करेगा

शारीरिक अस्वस्थता का अनुभव होगा। मानसिक अशांति भी उत्पन्न होगी। कोई अपशकुन भरा कार्य घटित होने की संभावना बार-बार सताती रहेगी। प्रभु आर्शीवाद से कुछ राहत के साँस ले सकते हैं। इस कारण प्रभु भक्ति में निष्ठा रखना योग्य होगा। यह आपके लिए महत्वपूर्ण समय माना जा सकता है। स्वगृह से (निवास स्थान से) दूर की यात्रा की सूचना है। अनेक प्रयास के बावजूद परिवार के अन्य अंगों के माध्यम से और मित्रों से अप्रिय व्यवहार का सामना करना होगा। यह सब कण्टक शनि के प्रभाव से हो रहा है। शय्या सुख में बाधा उत्पन्न होगी।

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	धनिष्ठ	मंगल	शनि	शुक्र
चन्द्र	मघा	केतु	रवि	रवि
रवि	धनिष्ठ	मंगल	बुध	राहु
बुध	शताभिषा	राहु	चन्द्र	शुक्र
शुक्र	पूर्वषाढा	शुक्र	चन्द्र	मंगल
मंगल	अशविनि	केतु	शुक्र	राहु
गुरु	पूर्व भद्रपाढा	गुरु	राहु	बुध
शनि	ज्येष्ठ	बुध	राहु	चन्द्र
राहु	रेवत्ति	बुध	शुक्र	गुरु
केतु	हस्त	चन्द्र	शुक्र	शुक्र
गुलिक	ज्येष्ठ	बुध	केतु	गुरु

निरायन संक्षिप्त (डिग्रि. मिनिट. सेकेन्ड.)

गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	मकर	28:40:20	धनिष्ठ / 2	गुरु	मीन	2:27:26	पूर्व भद्रपाढा / 4
चन्द्र	सिंह	3:0:56	मघा / 1	शनि	वृशचिक	25:50:12	ज्येष्ठ / 3
रवि	कुंम्भ	1:6:56	धनिष्ठ / 3	राहु	मीन	20:29:11	रेवत्ति / 2
बुध	कुंम्भ	19:1:48	शताभिषा / 4	केतु	कन्या	20:29:11	हस्त / 4
शुक्र	धनु	16:21:13	पूर्वषाढा / 1	गुलिक	वृशचिक	19:3:15	ज्येष्ठ / 1
मंगल	मेष	1:46:53	अशविनि / 1				

उपग्रह

हर गृह की अपेक्षा उपगृह की भी गुणना की जाती है। चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपगृह की गुणना सूर्य के रेखांश के आधार की जाती है। यह इस प्रकार है।

धुमीदी संग के उपग्रह

गृह	उपग्रह	गुणने की प्रक्रीया या पध्धती
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्रि. 20 मिनिट.
राहु	व्यथिपात	360 - धूम
चन्द्र	परिवेष	180 + व्यथिपात
शुक्र	इंद्रचाप	360 - परिवेष
केतु	उपकेतु	इंद्रचाप + 16 डिग्रि. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपगृहों का तथा अन्य मंगल के उपग्रहों के गुणन का आधार रात और दिन के आठ समान काल में बाँटे गये विभाजन पर आधारीत रहा है।

प्रारंभ विभाग दिन के स्वामित्व के लिये रखा गया है जब की शेष भाग हप्ते के दिल के स्वामित्व के लिये उपयोग में लिया गया है। आठ विभाजन के अधिपती नहि रहे हैं।जन्म रात को हुवा हो तो आठ समभाग से सात विभाजीत भागों को गृहों का स्वामी स्थान दिया

गया है। यह सप्ताह के पाँचवे दिनसे गिना जाता है।

रेखांश की गिनती केलिये दो अलग-अलग पध्धतियों का आविश्कार किया गया है।प्रथम पध्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (गृहों के स्वामी) गृहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पध्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण गृहाधीपती के आधिन रहता है।

जब गुलीक के हिसाव से देखों तो शनी के उपग्रह से एक तीसरी पध्धती का भी अनुसंधान किया गया जिससे रेखांश की गिनती की जाती है। यह नीचे दिये गये स्थाई उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार गुणनफल जो भी प्राप्त हुआ है इसे 'एस्ट्रो विज़न' के पध्धती के अनुसार 'मांदी' कहा जाता है। जन्मपत्रिका मे मुख्य गृह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 गटि	10 गटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
वुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकार्य पध्धती : लग्न के प्रारंभकाल

गृह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
रवि	काल	2:1:34	3:33:4
बुध	अर्धप्रहर	19:55:34	21:27:4
मंगल	मृत्यु	18:24:4	19:55:34
गुरु	यमकंठक	21:27:4	22:58:34
शनि	गुलिक	0:30:4	2:1:34

रेखांश उपगृह

उपग्रह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
काल	233:13:51	वृशचिक	23:13:51	ज्येष्ठ	2
अर्धप्रहर	144:14:15	सिंह	24:14:15	पूर्व फालगुनी	4
मृत्यु	121:26:23	सिंह	1:26:23	मघा	1
यमकंठक	167:29:51	कन्या	17:29:51	हस्त	3
गुलिक	212:10:49	वृशचिक	2:10:49	विशखा	4
परिवेष	105:33:4	कर्क	15:33:4	पुष्य	4
इंद्रचाप	254:26:56	धनु	14:26:56	पूर्वषाढा	1
व्यथिपात	285:33:4	मकर	15:33:4	श्रावण	2
उपकेतु	271:6:56	मकर	1:6:56	उत्तरषाढा	2
धूम	74:26:56	मिथुन	14:26:56	आर्द्र	3

नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी सहपती / नक्षत्राधी अनुसहपती तथां उपग्रहों की नामावली।

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	ज्येष्ठ	बुध	चन्द्र	शुक्र
अर्धप्रहर	पूर्व फालगुनी	शुक्र	बुध	बुध
मृत्यु	मघा	केतु	शुक्र	चन्द्र
यमकंठक	हस्त	चन्द्र	शनि	गुरु
गुलिक	विशखा	गुरु	राहु	शनि
परिवेष	पुष्य	शनि	गुरु	बुध
इंद्रचाप	पूर्वषाढा	शुक्र	शुक्र	राहु
व्यथिपात	श्रावण	चन्द्र	गुरु	राहु
उपकेतु	उत्तरषाढा	रवि	राहु	मंगल
धूम	आर्द्र	राहु	केतु	केतु

षोढसवर्गा टेबुल

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	10:	5	11	11	9	1	12:	8:	12:	6:	8:
औरा	5	5	5	4:	4:	5	4:	5	5	5	5
द्रिख्खन	6:	5	11	3	1	1	12:	4:	8:	2:	12:
चतूथांश	7	5	11	5	3	1	12:	5	6:	12:	2:
सप्तांश	10:	5	11	3	12:	1	6:	8:	10:	4:	6:
नवांश	6:	1	7	12:	5	1	4:	11	10:	4:	9
दशांश	3	6:	11	5	2:	1	8:	12:	2:	8:	10:
व्दादशांश	9	6:	11	6:	3	1	12:	6:	8:	2:	3
सोडांश	4:	6:	5	3	5	1	10:	6:	7	7	3
विंशाम्स	8:	11	9	9	3	2:	6:	2:	6:	6:	9
चतुर्विंशाम्स	2:	7	5	8:	6:	6:	5	12:	8:	8:	7
भम्श	5	3	8:	12:	3	2:	12:	9	4:	10:	3
त्रिंमशांश	8:	1	1	3	9	1	2:	8:	10:	10:	12:
खवेदांश	9	5	2:	2:	10:	3	10:	5	10:	10:	8:
	8:	9	6:	9	9	3	12:	7	3	3	9
शष्टियांश	7	11	1	1	5	4:	4:	11	4:	10:	10:
ओजराशी गणन	7	13	13	10	11	12	1	7	3	3	8

1-मेष 2-वृषभ 3-मिथुन 4-कर्क 5-सिंह 6-कन्या
7-तुला 8-वृशचिक 9-धनु 10-मकर 11-कुंम्भ 12-मीन

वर्गोत्तम

मंगल वर्गोतम में है ।

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	4	3	4	4	3	7	2	27
वृषभ	3	5	3	1	3	6	2	23
मिथुन	6	5	5	4	5	4	3	32
कर्क	1	4	5	5	5	3	2	25
सिंह	5	3	4	5	2	2	3	24
कन्या	6	2	2	6	1	5	4	26
तुला	4	5	6	4	4	7	4	34
वृशचिक	3	7	5	3	5	4	4	31
धनु	4	5	5	6	3	4	2	29
मकर	4	4	7	5	4	5	6	35
कुंम्भ	5	3	6	4	3	5	3	29
मीन	4	2	2	5	1	4	4	22
	49	48	54	52	39	56	39	337

षाढबाला संक्षिप्त टेबुल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
473.92	350.05	434.08	345.41	493.03	450.68	328.09
संपूर्ण शडबल (रूप)						
7.90	5.83	7.23	5.76	8.22	7.51	5.47
मौलीक ज़रूरतें						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.32	1.17	1.03	1.05	1.64	1.16	1.09
संबन्धी स्थानक						
2	3	7	6	1	4	5

इष्टफल, कष्टफल की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल	42.19	26.01	18.32	28.93	30.99	15.52	32.95
कष्टफल	4.36	30.96	33.03	30.84	27.36	44.01	21.14

भावबल की यादी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भावाधीपती का बल											
328.09	450.68	493.03	345.41	434.08	473.92	473.92	434.08	345.41	493.03	450.68	328.09
भावद्रिगबल											
30.00	40.00	10.00	0	20.00	40.00	30.00	10.00	20.00	30.00	40.00	40.00
भावद्रिष्टीबल											
-1.73	8.30	-0.05	-23.41	-9.95	4.17	-8.35	-17.08	-9.86	29.93	6.82	-3.26
संपूर्ण भावबल											
356.36	498.98	502.98	322.00	444.13	518.09	495.57	427.00	355.55	552.96	497.50	364.83
भावबल के रुप											
5.94	8.32	8.38	5.37	7.40	8.63	8.26	7.12	5.93	9.22	8.29	6.08
संबन्धी स्थानक											
10	4	3	12	7	2	6	8	11	1	5	9

With best wishes : Astro-Vision Futurtech Pvt.Ltd.
First Floor, White Tower, Kuthappadi Road, Thammanam P.O - 682032

[CompleteHoroscope 12.5.1.0]

Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.